साप्ताहिक
शांति मिशन
नई दिल्ली

वर्ष-28 अंक- 33 15 - 21 अगस्त 2021 पृष्ठ 12

अन्दर पढ़िए

तहरीके रेशमी रूमाल आंदोलन आज़ादी का एक प्रमुख अध्याय पृष्ठ-6

वर्तमान दौर के परिदृश्य में आज़ादी का इस्लामी स्वरूप क्या होना चाहिए पृष्ठ-7

स्वतंत्रता और लोकतंत्र के नाम पर सत्ता प्राप्त करने वाले ही बन रहे है उनके दुश्मन

देश को राजनीतिक दल किस दिशा में ले जा रहे हैं?

वर्तमान हालात हम से पूछ रहा है कि आख़िर देश किस दिशा में जा रहा है, आख़िर देश के एक आम नागरिक को उनका लाभ क्यों नहीं मिल पा रहा है।

आज हम अपनी आज़ादी का 75वां वर्ष बड़े गौरवान्वित होकर मना रहे है। पिछले मुड़कर देखते हैं तो हमें दिखता है कि भारत को एक आज़ाद और लोकतांत्रिक देश बनाने के लिए हज़ारों लोगों ने अपना जीवन कुर्बान किया, तो हज़ारों लोगों ने सालो साल जेल काटी। देश की आज़ादी के लिए अंग्रेजी हुकूमत के ख़िलाफ़ दो तरह के बलिदान हुए थे, एक अहिंसक और दूसरा सशस्त्र क्रांतिकारी। इसमें तमाम धनाढ्यों ने अपना सब कुछ लुटाकर संघर्ष किया, तो बहुतों ने तन-मन लगा दिया। तमाम यातनाओं और कष्टों से जूझते हुए 15 अगस्त 1947 को लाल क़िले पर प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरु ने आज़ाद भारत का झंडा लहराया था। उन्होंने लोकतांत्रिक संस्थाओं को सर्वोपरि रखा। नेहरू काल को अति लोकतांत्रिक माना जाता है, जिसमें उनके दल के लोगों को भी खुलकर विरोध करने पर शाबाशी दी जाती थी। नेहरू के आलोचना करने वाले लेख और उपहास उड़ाने वाले कार्टून बनाने वालों को भी सम्मान दिया जाता था।

संवैधानिक संस्थाओं में दख़ल न देने की परंपरा उन्होंने ही बनाई थी। अब हालात इतर है।। सच का आइना दिखाने पर गला घोटने की साज़िश की जाती है। पत्रकारों और मीडिया संस्थानों को अपने सामने घुटनों के बल चलाने के लिए तरकीब लगाई जाती है। जो चारण नहीं करते, उनको मारा जाता है। मुक़दमों में फंसा जाता है। उन संस्थानों को जांच एजेंसियों के ज़रिये डराया जाता है। नतीजतन अधिकतर मीडिया संस्थान सत्ता के आगे रेंगने लगे है। जिन संवैधानिक संस्थाओं पर न्यायिक, व्यवस्था, ईमानदार निर्वाचन और लोकतांत्रिक राज्य स्थापित करने का ज़िम्मा है, वही सबसे अधिक कदाचार और भ्रष्टाचार में डूबी हैं। हमारे देश ने ग़रीब से ग़रीब घर के बच्चों को भी सिर पर बिठाया है। लाल बहादुर शास्त्री हों या फिर चौधरी चरण सिंह और नरेन्द्र मोदी, ऐपीजे कलाम हों या फिर ज्ञानी जैल सिंह, इन नेताओं को इसी लोकतंत्र ने सर्वोच्च नेताओं को इसी लोकतंत्र ने सर्वोच्च पदों पर बिठाया है। तमाम ग़रीब, दलित, अल्पसंख्यक समुदाय के लोगों के सर्वोच्च पदों पर पहुंचने का रास्ता बनाया है। सामान्य घरों के युवाओं को लोकसेवा के शीर्ष पदों का सुख दिया है। जब ऐसे लोग शीर्ष पदों पर पहुंचते हैं, तो उनसे उम्मीद की जाती है कि वे लोकतांत्रिक व्यवस्था को सुदृढ़ करेंगे।

निश्चित रूप से लोकतंत्र मज़बूत भी हुआ था, मगर कुछ सालों से जो घटा है, उससे वही लोकतंत्र बदतर हाल में जा रहा है। हालात ये ही चले हैं कि सत्ता में बैठे नेता, अब अपना सबसे बड़ा शत्रु ही लोकतंत्र को मानने लगे हैं। शायद यही कारण है कि वे अब उसी लोकतंत्र का गला घोंटने की नीतियां बना रहे हैं, जिसने उन्हें इन पदों तक पहुंचाया है। इन दिनों हम न्यायपालिका को अन्याय, चुनाव आयोग को मर्यादाएं तोड़ते, लोक सेवकों घरेलू नौकर की तरह सत्तानशीन की गंदगी साफ करते और मीडिया को उनके एजेंडे सेट करते देख रहे हैं। अब पूछा जाने लगा है कि आप किस पार्टी के अधिकारी-पत्रकार हैं? इन दोनों की विश्वसनीयता ख़त्म हैं? देश के सजग नागरिक इन्हें सम्मान से नहीं देखते हैं?

सेल्फी के दौर में लोग सेल्फिश बन सिर्फ अपने मुनाफे की बात करते हैं। सरकार लोक कल्याण से अधिक अपने सियासी लाभ के लिए काम करती है। रिश्तों में भी हानि-लाभ देखा जाने लगा है। चुनाव के समय नेता खुद को सहृदयी दिखाने के लिए अपने बुजुर्ग पारिवारिक सदस्यों के साथ मजमा लगाते हैं और फिर भूल जाते हैं। हमारे देश ने मगध का साम्राज्य देखा है, तो मुग़लों की बादशाहत भी। महाभारत काल भी देखा और अंग्रेज़ी हुकूमत भी। लोकतांत्रिक प्रधानता वाला नेहरु काल देखा है और इंदिरा गांधी का आपातकाल भी।

हमने लाल बहादुर शास्त्री जैसा ग़रीब घर का विद्वान् और सरल प्रधानमंत्री भी देखा है और नरेन्द्र मोदी जैसा स्मार्ट ब्रांडेड भी देख रहे हैं। हमने किसानी करने वाले चौधरी चरण सिंह को भी देखा है और व्यवसायी मोरारजी देसाई जैसे को भी। हमने वैदिक सनातन राष्ट्र भी देखा है और कट्टर हिन्दुत्व को अपनाता देश भी देख रहे हैं। हमने प्रेम-भाईचारे के साथ हर संप्रदाय को खुशियां और ग़म बांटते बांटते देखा है और अब उन्हें आपस में घृणा भाव में भी देख रहे हैं। आख़िर उस लोकतंत्र में ऐसा क्या हो गया, जिसको पाने के लिए हमारे हज़ारों पूर्वजों ने प्राणों की आहुति दी, लाखों ने यातनायें सही?

क्या लोकतंत्र दूषित हो गया है?

सेल्फी के दौर में लोग सेल्फिश बन सिर्फ अपने मुनाफे की बात करते हैं। सरकार लोक कल्याण से अधिक अपने सियासी लाभ के लिए काम करती है। रिश्तों में भी हानि-लाभ देखा जाने लगा है। चुनाव के समय नेता ख़ुद को सहृदयी दिखाने के लिए अपने बुज़ुर्ग पारिवारिक सदस्यों के साथ मजमा लगाते हैं और फिर भूल जाते हैं। हमारे देश ने मगध का साम्राज्य देखा है, तो मुग़लों की बादशाहत भी। महाभारत काल भी देखा और अंग्रेज़ी हुकूमत भी। लोकतांत्रिक प्रधानता वाला नेहरु काल देखा है और इंदिरा गांधी का आपातकाल भी।

ये प्रश्न तब खड़े होते हैं, जब लोकतंत्र को बनाने वाले नागरिकों पर ही देशद्रोह से लेकर अशांति फैलाने तक के हज़ारों मुक़दमें दर्ज किये जाते हैं। अपनी बात रखने के लिए प्रदर्शन और आंदोलन करने वालों की संपत्तियां ज़ब्त की जाती हैं। देश का भविष्य युवाओं को जेलों में डाल दिया जाता है। बेटियों के साथ हर तरह की अमानवीयता होती है। उन्हें हक़ मांगने पर लाठी और आपराधिक मुक़दमे मिलते हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने के दावों के बीच उनका सार्वजनिक चीरहरण किया जाता है। देशवासी धृतराष्ट्र बन डरे-सहमें यह सब देखते रहते हैं। सत्ता के शीर्ष पर बैठे लोक प्रतिनिधि, ऐसे समय में भीष्म पितामह की तरह मौन साध लेते हैं।

इस वक़्त देश की न्यायपालिका से लेकर सत्ता पक्ष तक, विपक्षी दलों से लेकर पत्रकारों तक के फोन के सर्विलांस की ख़बरें आम हैं। संसद भवन से कुछ दूरी पर किसान पुलिस छावनी के बीच अपने हक़ की संसद लगाने को विवश है। सियासी नेता सत्ता और संगठन में पद के लिए लड़ रहे हैं। नागरिकों के दर्द को बयां करने वालों को लाठी और नज़रबंदी का सामना करना पड़ रहा है। देश की आर्थिक बदहाली के इस दौर में बेरोज़गारी और महंगाई के कारण रोज़ाना एक सैकड़ा लोग आत्महत्या कर रहे हैं। दवाओं और ऑक्सीजन के अभाव में लाखों लोगों के मरने के बाद भी सरकार कहती है कि कोई नहीं मरा। न्यायपालिका यह कहकर चुप हो जाती है कि देशद्रोह की धारा औपनिवेशिक साम्राज्य के लिए थी। इसका दुरुपयोग न हो। वह न मरीज़ों को इलाज दिला पाती है और न ज़रूरतमंदों को मदद। सीआरपीसी की धारा 144 दमन का साधन बन गई है। यह अब विशेष परिस्थिति में नहीं बल्कि हर वक्त थोप दी जाती है। इसमें कार्यवाही सत्ता की सुविधानुसार होती है।

अब सहिष्णुता, सदभाव, भाईचारे और धर्मनिरपेक्षता की बात करने वालों को समाज का दुश्मन बताया जाने लगा है। ग़रीब, दुर्बल और दलित घरों से आये नेता ही, अब धनाढ्यों और कारपोरेट्स का साम्राज्य स्थापित

बाक़ी पेज 11 पर

पाकिस्तान

जीत से ज़्यादा चुनौतियाँ हैं इमरान के लिये

पाक अधिकृत कश्मीर में हाल में हुए चुनावों में इमरान ख़ान की पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ़ (पीटीआई) ने ज़ोरदार जीत हासिल की है। इससे पहले यहां नवाज़ शरीफ की पार्टी सत्ता में थी। इस जीत से इमरान ख़ान खासे उत्साहित इसलिए भी हैं, क्योंकि उन्होंने यहां शिकस्त पंजाब के दिग्गज नेता नवाज़ शरीफ़ की पार्टी को दी है हालांकि एक सच्चाई यह भी है कि पाक अधिकृत कश्मीर में सत्ता वही हासिल करता है जिसका नेशनल असेम्बली में बहुमत होता है। नवाज़ शरीफ़ की पार्टी भी पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में सत्ता उस समय हासिल करने में सफल हो गई थी जब नवाज़ पाकिस्तान के प्रधानमंत्री थे। इमरान ख़ान ने भी इसी परंपरा को दोहराया है। अगर इमरान ख़ान प्रधानमंत्री नहीं होते और सेना का समर्थन नहीं मिला होता तो पाक अधिकृत कश्मीर में सत्ता हासिल करना उनके लिए इतना आसान नहीं थी।

पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर के चुनाव नतीजे कुछ कारणों से इमरान ख़ान के लिए सुखद हैं। वे इस जीत की आड़ में अब अपनी सरकार की तमाम नाकामियों को छुपाने में जुट गए हैं। पाकिस्तान में आम चुनाव 2023 में होने हैं। इसके लिए इमरान ख़ान हालिस चुनावी नतीजों को भुनाएंगे। पाकिस्तान लंबे समय से बेरोज़गारी, भ्रष्टाचार, महंगाई जैसी समस्याओं से जूझ रहा है और इमरान सरकार इन समस्याओं से निपटने में नाकाम रही है। इसके अलावा अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति में भी उन्हें लगातार झटके लग रहे हैं। बेशक पाक अधिकृत कश्मीर में इमरान की पार्टी जीत गई हो, लेकिन कश्मीर मसले को लेकर उनका पलड़ा अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कमज़ोर पड़ता जा रहा है। भारत ने कई इस्लामिक देशों को अपने पक्ष में कर पाकिस्तान की कूटनीति को झटका दिया है। अफ़ग़ानिस्तान का संकट भी इमरान के लिए बड़ा सिरदर्द बनता जा रहा है। ऐसे में आने वाले समय में अपने को सत्ता में बनाए रखना इमरान के लिए बड़ी चुनौती बनता जा रहा है।

इमरान ख़ान बतौर प्रधानमंत्री अभी तक विफल ही बताए जा रहे है लेकिन उनकी पार्टी की सफलता यह ज़रूर है कि पंजाब और ख़ैबर पख़्तूनख्वां के बाद पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में भी उन्हें सत्ता मिल गई है। वे अब सिंध की ओर अपना ध्यान लगा रहे हैं जहां अभी तक (स्वर्गीय) बेनज़ीर भुट्टो की पाकिस्तानी पीपुल्स पार्टी को सत्ता से हटाना तमाम राजनीतिक दलों के लिए मुश्किल भरा काम रहा है। पाकिस्तान

इमरान ख़ान बतौर प्रधानमंत्री अभी तक विफल ही बताए जा रहे है लेकिन उनकी पार्टी की सफलता यह ज़रूर है कि पंजाब और ख़ैबर पख़्तूनख्वां के बाद पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में भी उन्हें सत्ता मिल गई है। वे अब सिंध की ओर अपना ध्यान लगा रहे हैं जहां अभी तक (स्वर्गीय) बेनज़ीर भुट्टो की पाकिस्तानी पीपुल्स पार्टी को सत्ता से हटाना तमाम राजनीतिक दलों के लिए मुश्किल भरा काम रहा है।

अधिकृत कश्मीर की जीत इमरान ख़ान को सिंध में कितनी मदद देगी, यह तो समय ही बताएगा क्योंकि जाति, बिरादरी, नस्ल और प्रांतों में विभाजित पाकिस्तान की राजनीति में इमरान ख़ान की बिरादरी कमज़ोर है। वे पश्तून बिरादरी के हैं जिसका वर्चस्व ख़ैबर पख़्तूनख्वां में ही हैं। इमरान ख़ान पर जाति, बिरादरी का कट्टर समर्थक होने का आरोप लगता रहा है।

पंजाब की राजनीति इमरान के लिए चुनौती भरी साबित होगी। ख़ैबर पख़्तूनख्वां प्रांत पश्तून बिरादरी का वर्चस्व वाला है। यहां प्रांतीय असेंबली में इमरान ख़ान के पास चौरानवें सीटें हैं लेकिन पंजाब में नेशनल और प्रांतीय असेंबली के चुनाव में नवाज़ शरीफ की पार्टी ने इमरान ख़ान की पार्टी को कड़ी टक्कर दी थी। आज भी पंजाब के ग्रामीण इलाक़ों में लोग बिरादरी और जाति के नाम पर वोट देते हैं। इमरान ख़ान ने दक्षिण पंजाब में मज़बूत बलूच जाति के उस्मान बुजदार को मुख्यमंत्री बनाकर पंजाब की राजनीति में नया खेल शुरू किया। उन्होंने मज़बूत जाट, राजपूत और अरैण बिरादरी को किनारे लगाने की कोशिश की। इमरान ख़ान की इस राजनीति को पंजाब की राजनीति में हावी राजपूत, जाट, गुर्जर और अरैण जातियों ने स्वीकार नहीं किया। उत्तर पंजाब की राजनीति में राजपूत ज़्यादा मजबूत हैं और मध्य पंजाब में जाट। दूसरी ओर, कश्मीरी मूल के होने के बावजूद नवाज़ शरीफ़ ने पंजाब की राजनीति में मज़बूत जातियों को बड़ी चालाकी से साधा। 1980 और 1990 के दशक में चौधरी परिवार (चौधरी शुजात हुसैन और चौधरी परवेज़ इलाही) ने इन्हें पंजाब की राजनीति चुनौती दी थी लेकिन अंत में उन्हें नवाज़ शरीफ़ के साथ लंबे समय तक चलना पड़ा। हालांकि पंजाब की राजनीति में जाट कितने महत्वपूर्ण हैं, इसका अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि जाट बिरादरी से संबंधित इस चौधरी परिवार को न तो नवाज़ शरीफ़ नज़रअंदाज़ कर पाए, न ही परवेज़ मुशर्रफ़। आसिफ अली ज़रदारी भी इन्हें किनारे करने में सफल नहीं हुए। अब इमरान ख़ान भी इस परिवार को साथ लेकर पंजाब की राजनीति कर रहे हैं।

पाकिस्तान की सत्ता संभालने के बाद इमरान ख़ान के नाम कोई बड़ी उपलब्धि दर्ज नहीं हो पाई है। भ्रष्टाचार पर क़ाबू पाने के लिए शुरू में तो इमरान ने लंबे चौड़े दावं किए थे और भ्रष्टाचार के आरोप में नवाज़ शरीफ़ और उनकी बेटी मरियम नवाज़ को जेल भी भेजा था। पर इस मोर्चे पर

बाक़ी पेज 11 पर

10 वर्ष बाद होगी दिल्ली के विधायकों के वेतन में वृद्धि

दिल्ली के विधायकों के वेतन में करीब दस वर्ष बढ़ोत्तरी होगी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता में हुई दिल्ली कैबिनेट की बैठक में केन्द्र सरकार के प्रस्ताव के मुताबिक विधायकों की वेतन बढ़ोत्तरी को मंजूदी दी गई हैं दिल्ली के विधायकों को अब 30 हज़ार रूपये वेतन के तौर पर मिलेंगे। यहीं, वेतन के साथ अगर भत्तों को भी जोड़ें तो दिल्ली के विधायक को 90 हज़ार रुपये मिलेंगे। हालांकि दिल्ली सरकार ने केन्द्रीय गृह मंत्रालय से अपील की थी कि दिल्ली के विधायकों का वेतन और भत्ते अन्य राज्यों के विधायकों को बराबर किया जाए। लेकिन केन्द्र ने दिल्ली सरकार के प्रस्ताव पर सहमति नहीं जताई। केन्द्र की ओर से विधायकों के वेतन में इज़ाफे के लिए जो फार्मूला भेजा गया था, उसके मुताबिक ही दिल्ली कैबिनेट ने विधायकों के वेतन में बढ़ोत्तरी को मंज़ूरी दी है।

दिल्ली सरकार के एक सीनियर अधिकारी का कहना है कि दिल्ली कैबिनेट ने केन्द्र सरकार के प्रस्ताव के मुताबिक, विधायकों के लिए वेतन बढ़ोतरी को मंज़ूरी दी है लेकिन इसके बाद भी दिल्ली के विधायक पूरे देश में सबसे कम वेतन पाने वाले विधायकों में से एक होंगे। दिल्ली के विधायकों में से होंगे। दिल्ली के विधायकों का वेतन पिछली बार 2011 में बढ़ा था और दिल्ली सरकार ने केन्द्रीय गृह मंत्रालय से अनुरोध किया था कि विधायकों का वेतन और भत्ते अन्य राज्यों के विधायकों के बराबर किया जाए। कई राज्य अपने विधायकों को हाउस रेंट, ऑफिस रेंट, स्टाफ और वाहन भत्ता जैसी अन्य सुविधाएं और भत्ते देते हैं, लेकिन दिल्ली के इन सुविधाओं से वंचित है।

दिल्ली सरकार के मुताबिक, दिल्ली के विधायक देश के अन्य राज्यों के विधायकों की तुलना में सबसे कम वेतन पाने वालों में से होंगे। उत्तराखण्ड में विधायक को 1.98 लाख, हिमाचल प्रदेश में 1.90 लाख, हरियाणा में 1.55 लाख, बिहार में 1.30 लाख रुपए का वेतन और भत्ते विधायकों को मिलना है। इसके अलावा भी कई अन्य राज्य अपने विधायकों को बहुत अधिक वेतन व भत्तों का भुगतान करते हैं। जैसे - राजस्थान में 1.42 लाख रुपये और तेलंगाना में विधायकों को सबसे अधिक 2.5 लाख रुपये हर माह दिए जाते हैं।

विधायकों को मिल सकती है इतनी सैलरी	
वेतन	30,000
चुनाव क्षेत्र भत्ता	25000
सचिवालयी भत्ता	15000
टेलिफोन भत्ता	10,000
वाहन भत्ता	10,000
कुल	90,000

क्या था सरकार का प्रस्ताव

दिल्ली सरकार ने अन्य राज्यों के बराबर विधायकों के लिए 54000 रुपये वेतन का प्रस्ताव भेजा था। हालांकि केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने ऐसा करने की अनुमति नहीं दी और वेतन को 30 हजार रुपये तक सीमित कर दिया। इस तरह, अब दिल्ली के विधायकों के वेतन और भत्ते को केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने 90 हज़ार रुपये तक सीमित कर दिया है। दिल्ली के विधायकों के वेतन और भत्तों में बढ़ोत्तरी का प्रस्ताव पिछले 05 वर्ष से गृह मंत्रालय के पास लंबित था। कई चर्चाओं के बाद, गृह मंत्रालय ने इस बढ़ोत्तरी को 90 हजार रुपये प्रति माह तक सीमित करने का फैसला किया। दिल्ली कैबिनेट ने दिल्ली सरकार के मंत्रियों के वेतन और भत्ते (संशोधन) के विधायक/ स्पीकर/डिप्टी स्पीकर/मुख्य सचेतक/ विपक्ष के नेता (संशोधन) विधेयक 2021 को मंज़ूरी दे दी। कैबिनेट की मंज़ूरी के बाद दिल्ली विधान सभा में रखे जाने से पहले प्रस्ताव और मसौदा विधेयकों को गृह मंत्रालय की मंज़ूरी के लिए भेजा जाएगा। ❑❑

दिल्ली में मिलती रहेगी फ्री वाई-फाई सुविधा : केजरीवाल

राजधानी में फ्री वाई-फाई सुविधा जारी रहेगी। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की अध्यक्षता में हुई दिल्ली कैबिनेट की बैठक में शहर में फ्री वाई-फाई सुविधा को जारी रखने पर मुहर लगाई गई है। अभी केजरीवाल सरकार इस सुविधा के तहत दिल्ली के 10561 जगहों पर हॉट स्पॉट लगा चुकी हैं। दिल्ली सरकार का कहना है कि दिल्ली दुनिया का पहला शहर है, जहां सरकार की ओर से पूरे शहर के लिए फ्री वाई-फाई की सुविधा दी गई है।

कैबिनेट की बैठक में दिल्ली के लोगों को दी जा रही फ्री वाई की सुविधा जारी रखने को मंजूरी दी गई। सीएम केजरीवाल ने दिसंबर-2019 में आईटीओ बस स्टॉप से फ्री वाई फाई योजना की शुरूआत की थी। पूरी दिल्ली में फ्री वाई फाई देने के लिए 11 हज़ार हॉट स्पॉट लगाने का टारगेट तय किया गया था। अभी तक दस हज़ार से ज़्यादा जगहों पर हॉटस्पॉट लगाए गए हैं, जिसमें से 2208 हॉटस्पॉट बस स्टॉप पर लगाए गए हैं। जबकि 8353 अन्य जगहों पर लगाए गए हैं। लोगों को हर 500 मीटर की दूरी पर फ्री वाई-फाई की सुविधा मिल रही है। अब 21 लाख से अधिक लोग एक साथ फ्री वाई/फाई का इस्तेमाल कर सकते हैं। दिल्ली सरकार के एक सीनियर अधिकारी का कहना है कि हर हॉटस्पॉट की 100 मीटर रेडियंस की रेंज हैं। हर व्यक्ति को 15 जीबी डेटा हर माह मुफ्त दिया जा रहा है। हर रोज़ 1.5 जीबी डेटा मुफ्त दिया जा रहा हैं। औसतन 100 से 200 एमबीपीएस की स्पीड मिल रही है। 11 हजार हॉट स्पॉट पूरी दिल्ली में लगाए जाने हैं, जिसमें से अधिकतर लगाए जा चुके हैं। इन हॉट/स्पॉट्स के ज़रिए दिल्ली में हरेक 500 मीटर पर लोगों को एक वाई/फाई जोन मिल रहा है। हर हॉट स्पॉट की 100 मीटर रेडियस की रेंज होगी। जो प्लान किया गया था, उसमें कई सारे जो हाई डेंसिटी वाले क्षेत्र थे, वहां पर 200 एमबीपीएस स्पीड है और जहां काफी ज़्यादा लोड है, वहां पर 100 एमबीपीएस हैं। इंटरनेट की स्पीड अधिकतम 200 एमबीपीएस और न्यूनतम 100 होगी। ❑❑

संपादकीय

शांति मिशन

यौमे आज़ादी पर मुसलमान भी अपने

बुज़र्गों की शहादत को प्रकाश में लायें

आज हम अपने प्यारे वतन भारत में आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। देश को आज़ादी दिलाने में हर तबक़े और धर्म के लोगों का योगदान रहा है, ये बात और है कि मौजूदा सरकार और संघ भारत की आज़ादी में मुसलमानों के किरदार को दर्शाने में शर्म महसूस करता है। देश के स्वाधीनता के लिए तन-मन धन का बलिदान देने वालों में हिन्दू मुसलमान बराबर के शरीक रहे हैं और 1857 में जब बहादुर शाह ज़फर की गुलामी मुगल बादशाहत को ख़त्म करने और अंग्रेजी साम्राज्य को भारत पर मुसल्लत करने के लिए कारवां लाल क़िले की तरफ बढ़ना शुरू हुआ तो ये कमज़ोर व नातवां और 80 वर्षीय बहादुर शाह जफर ही था जिसने विद्रोहियों की कमान संभाल कर अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध पहली गोली दागी़ थी क्योंकि सत्ता मुसलमानों के हाथों से अंग्रेजी साम्राज्य के हाथों में पहुंची थी इसलिए स्वाभाविक रूप से ये दोनों क़ौमें ही एक दूसरे के सामने थी फिर मुसलमानों को इस बात का अहसास था कि हिलाल व सलीब की जंग में शताब्दियों तक हारते रहने के कारण अंग्रेजों की बदले की भावना का शिकार वही होंगे इसलिए वह शुरू से ही अंग्रेजी साम्राज्य के मुकाबिल थे दिल्ली के दरो-दीवार इस बात के गवाह हैं कि जब-जब हारे हुए इसाईयों की बदले की आग भड़की मुसलमानों को ही इसका निशाना बनना पड़ा सन 1857 में दाढ़ी और लम्बे कुर्ते वालों को हिलाल का प्रतिनिधि समझते हुए फांसी पर लटका दिया और जब तक सात वलियों की दहलीज़ कही जाने वाली दिल्ली नेक और पारसा लोगों को देखने को तरस नहीं गयी अंग्रेजों की बदले की आग ठंडी नहीं पड़ी फिर मुसलमानों से अकेले ये सलीब की शिकस्त का ही बदला नहीं था बल्कि अंग्रेज़ जानता था कि जिस कौम ने इंतिहाई शान शौक़त के साथ हिन्दुस्तान में पूरे एक हज़ार साल तक शासन किया वह किसी दूसरे की हुक्मरानी को सहन नहीं कर सकती इसलिए बहुत चालाकी और होशियारी के साथ इन सभी स्रोतों को बंद करने की ठान ली जिनसे इसके ख़िलाफ़ कोई हल्की सी आवाज़ भी निकल सकती थी इसलिए पहले मुसलमानों के सत्ता स्रोतों पर कब्ज़ा किया और फिर उनकी पहचान को मिटाने के लिए उनके धर्म को निशाना बनाया गया।

अंग्रेजी साम्राज्य के नब्बे साल के दमनकाल में मुसलमानों को दोहरा संघर्ष करना पड़ा एक तरफ वह वतन की आजादी के लिए बिरादराने वतन के साथ कंधे से कंधा मिलाकर संघर्ष कर रहे थे और दूसरी ओर अपनी दीनो ईमान की रक्षा के लिए ईसाई मिशनरियों का मुक़ाबला करके इनको हिन्दोस्तान से फरार होने पर मजबूर कर रहे थे। देश के विभिन्न भागों में दीनी मदारिस व मकातिब का सिलसिला कायम करके मुसलमानों के ईमान व इस्लाम को एक मजबूत चट्टान बनाने की कोशिश की वह खुदा के फज़्लों करम से कामयाब भी रहे।

हमें बिरादराने वतन की आज़ादी की लड़ाई में कुर्बानियों से इंकार नहीं है देश की आज़ादी के लिए इनके दिलों की तड़प भी काबिले दाद है लेकिन ये बात हम साफतौर पर कह सकते हैं कि बिरादराने वतन की ओर से अमलन इस इच्छा का इज़हार बहुत बाद में उस वक्त हुआ जब हिन्दुस्तान के मुसलमान जमीअत उलेमा-ए-हिन्द के प्लेटफार्म से इस मैदान में बहुत आगे निकल चुके थे। मुकम्मल आज़ादी का नारा भी सबसे पहले मुसलमानों की नुमाईन्दा तंज़ीम जमीअत उलेमा-ए-हिन्द ने ही सबसे पहले लगाया था। उसने 1926 के अपने कलकत्ता अधिवेशन में पूर्ण स्वराज को अपना लक्ष्य क़रार देते हुए एक मुकम्मल प्रस्ताव पास किया था जबकि कांग्रेस जैसा पुराना संगठन इसके पांच साल बाद 1931 तक भी कुछ ख़ास रियायतें लेने पर राज़ी था इसलिए यह कहना अतिश्योक्ति पूर्ण न होगा आजादी का बिगुल सबसे पहले मुसलमानों ने ही बजाया हिन्दू और मुसलमानों के सामूहिक संघर्ष और ज़बरदस्त जानी व माली तबाही के बाद 15 अगस्त 1947 को देश स्वतंत्र हुआ, मगर अफसोस यह आजादी की सौग़ात हमें इस हाल में मिली कि देश का अधिकतर हिस्सा आग और खून का शिकार था अंग्रेजी साम्राज्य खुश था कि इसने देश की दो बड़ी क़ौमों हिन्दू व मुसलमानों को बांट दिया है और अब वह इस मंज़िल पर पहुंच चुकी है एक लम्बे अर्से तक आग व खून उनका मुक़द्दर बना रहेगा। दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के तुरंत बाद दोनों देशों विशेषकर भारत में जिस मानसिकता को आगे बढ़ने और फलने फूलने का अवसर मिला वह इसी अंग्रेजी साम्राज्य की ज़ेरे सरपरस्ती पैदा होने वाली मानसिकता थी जिसका उद्देश्य हिन्दू और मुसलमानों को आपस में लड़ाना और अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति है और आज जबकि आज़ादी पर 66 साल गुज़र चुके हैं अंग्रेजी साम्राज्य के वफादारों का यह अमल लगातार जारी है और आज भी इन नमकखाने वालों का यह अमल लगातार जारी है।

यह सही बात है कि आज़ादी एक क़ीमती नेमत है अगर उस समय जब इसके फल एक-एक व्यक्ति तक पहुंच जायें! आज हम देख रहे हैं कि आज़ादी की नेमतों और उसके फलों से एक वर्ग विशेष ही फायदा उठा रहा है बाकी पूरे देश को शायद ये मालूम नहीं कि आजादी क्या होती है।

ये किस क़दर अफसोस की बात है कि जिन लोगों ने देश की आज़ादी के लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दिया उनका आज न केवल यह कि तज़करा नहीं किया जाता बल्कि योजनाबद्ध तरीके से उन्हें भुला देने की कोशिश की जा रही है। आज ले-देकर सिर्फ नेहरू और गांधी ही देश की आज़ादी की निशानी बन कर रह गये हैं और इन दो के अलावा किसी और मुजाहिदे आज़ादी का कोई तज़करा नहीं किया जाता। आज हमारे नेताओं को गांधी जी तो याद रह गये मगर गांधी जी को महात्मा गांधी बनाने और पूरे देश में इन्हें प्रचारित कराकर राष्ट्रीय नेता की हैसियत देने वाले हज़रत शेखुल हिन्द, हज़रत शेखुल इस्लाम और मौलाना आज़ाद को भूल गये अगर हज़रत शेखुल हिन्द आज़ादी की तहरीक में हिन्दू कौम के सहयोग के लिए मुसलमानों को हिदायत न फरमाते तो कौन कह सकता था कि हिन्दुस्तान का हिन्दू साउथ अफ्रीका से नाकामियों का शिकार होकर लौटने वाले गांधी को आजादी की तहरीक की बागडोर सौंप देते। ये हज़रत शेखुल हिन्द ही थे जिन्होंने गांधी जी को बढ़ाया और पूरे मुल्क में उनके दौरों का बंदोबस्त किया आज उन्हें शेखुल हिन्द और उनके पैरोकारों को आजादी के इतिहास से बाहर कर दिया गया है।

15 अगस्त के स्वतंत्रता दिवस के जश्न पर मुसलमानों का भी इतना ही हक़ है जितना दूसरे देशवासियों का इसलिए मुसलमानों को चाहिए कि वह इस राष्ट्रीय पर्व में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लें और पूरे देश में पूरी तैयारी से इसे मनायें। हर कौम व मिल्लत को अपने इतिहास को ज़िन्दा रखने का हक़ है। मुसलमान भी इस अवसर पर अपने गौरवशाली इतिहास अपने अकाबिर के कारनामों पर जंगे आजादी में उनकी कुर्बानियों को पूरी तरह उजागर करें। सरकारी स्तर पर मुसलमानों को नज़रअंदाज़ करने की जो साज़िश की जा रही है यही इसका एकमात्र जवाब है इसलिए हम अपने बुजुर्गों और अकाबिरे उम्मत के इतिहास को ज़िन्दा भी रख सकेंगे और इस महान इतिहास के साथ अपने लगाव का इज़हार भी कर सकेंगे। ज़िन्दा क़ौमे खुद के इतिहास को सुरक्षित करती हैं और अल्लाह का फज़्ल है कि हम अभी ज़िन्दा है और अपने इतिहास को जीवित रखने की पूरी-पूरी क्षमता रखते हैं हम इस अवसर पर सामाजिक संगठनों दीनी मदरसों और मिल्लत के रहनुमाओं से अपील करना अपना फर्ज़ समझते हैं कि वह इस आंदोलन को आगे बढ़ाये। मुसलमानों को 15 अगस्त के जश्ने आज़ादी के महत्व की तरफ आकर्षित करें और इस दिन जगह-जगह आजादी का जश्न मनाकर इनमें दूसरे स्वतंत्रता सेनानियों के साथ अपने अकाबिर के कारनामों को भी रोशनी में लाये ताकि इतिहास के खोये हुये पन्ने एक बार फिर सामने आ सकें और इन्हें इतिहास से मिटाने वाले अपनी साज़िशों में नाकाम होकर रह जायें। ❑❑

तारीख़े इस्लाम

ख़ुतबाते सीरते तैयिबा

मुफ़्ती मुहम्मद सलमान मंसूरपुरी क़िस्त- 85

हज़रत हुज़ैफ़ा बिन यमान रज़ि अल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि ठंडक सख़्त हो रही थी, लोग थक हार कर बिल्कुल ख़ामोश बैठे थे, हुज़ूर ने फ़रमाया कि कौन है जो ख़न्दक़ पार करके लश्कर की ख़बर लाए? तो सहाबा इस क़द्र थके हुए थे कि किसी की हिम्मत न हुई, क्योंकि ठंडक सख़्त थी और गोया कि वह तो अज़ाब था, आप ने तीन मर्तबा फ़रमाया लेकिन किसी में हिम्मत न हुई, चौथी मर्तबा हज़रत ने मेरा नाम लेकर फ़रमाया: ''हुज़ैफ़ा खड़े हो।''

और फ़रमाया कि जाओ देख कर आओ। फ़रमाते हैं कि या तो ठंडक इतनी तेज़ हो रही थी, लेकिन जैसे ही मैं हुज़ूर के हुक्म की तामील में चला, तो मालूम हो रहा था कि मेरे इर्द गिर्द आग का अलाओ जल रहा है, ज़र्रा बराबर भी ठंडक का ऐहसास नहीं हुआ, जब मैं वहाँ पहुंचा तो वे लोग आग के इर्द गिर्द बैठे हुए थे, और हर एक हवास बाख़्ता था, मेरे देखते ही देखते वहाँ भगदड़ मच गई, और मैंने वापस आकर पैग़म्बर अलैहिस्सलाम को ख़बर सुनाई कि ख़ुशख़बरी क़ुबूल कीजिये! अल्लाह तआला ने दुश्मन को दफ़ा कर दिया।

फ़रमाते हैं कि जैसे ही मैंने रिपोर्ट पेश की तो फ़ौरन मुझे ठंडक लगने लगी, हज़रत ने अपनी चादर मुझे उढ़ा दी, मैं रात भर का जागा हुआ था फ़ौरन सो गया, जब नमाज़ का वक़्त हुआ तो हुज़ूर ने प्यार से फ़रमाया:

''अरे बहुत सोने वाले उठ जा!''

तो अल्लाह तआला ने पैग़म्बर अलैहिस्सलाम और सहाबा-ए-किराम की मददें फ़रमाई, और यह वह आख़िरी जंग थी जिस के बाद मक्के वालों से किसी जंग की नौबत नहीं आई। (अल बिदाया वन्निहाया जि. 4 स.497, ज़ादुल मआद 611)

क़बीला-ए-औस के सरदार हज़रत सअ्द बिन मुआज़ रज़ि अल्लाहु अन्हु की रग-ए-अकहल में उस जंग में एक तीर लग गया था, उन्होंने दुआ फ़रमाई थी कि इलाहल आलमीन! अगर आज के बाद भी तेरी नज़र में क़ुरैशे मक्का से कोई जंग मुक़द्दर है तो मुझे ज़िंदगी अता फ़रमाइये, और अगर कोई जंग नहीं होनी है तो मुझे अपने पास बुला लीजिये, चुनान्चे उसी ज़ख़्म की वजह से उनकी शहादत और वफ़ात का वाक़िआ पेश आया। हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने उनके बारे में फ़रमाया कि 70 हज़ार फ़रिश्ते उनके जनाज़े में शरीक हुए, यह अंसार के बहुत बड़े सरदार थे, और हुज़ूर ने उनके लिए अपनी मस्जिद के मैदान में ख़मा लगवा रखा था ताकि उनकी इयादत में आसानी हो, और उसी में उन की शहादत का वाक़िआ पेश आया। (अल-बिदाया वन्निहाया, 4/511-512)

इसके बाद कुफ़्फ़ारे मक्का की मदीना मुनव्वरा की तरफ़ रूख़ करने की कभी हिम्मत नहीं हुई अलबत्ता अगले साल यानी 6 हिजरी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक ख़्वाब देखा था, जिस में उमरा करने की जानिब इशारा था, चुनान्चे आप ने 1400 सहाबा के साथ मक्के का सफ़र फ़रमाया, उसकी तफ़्सील इंशा अल्लाह आइन्दा बयान की जायेगी।

15 अगस्त के बाद बढ़ना शुरू हो सकता है कोरोना का संक्रमण, सतर्क रहने की ज़रूरत

डॉ॰ बी॰ एल॰ शेरवाल

कोरोना की तीसरी लहर की संभावना को देखते हुए राजधानी के सभी अस्पतालों में स्वास्थ्य सेवाओं को दुरुस्त किया जा रहा है, आगामी लहर कितनी घातक होगी और क्या तैयारियां चल रही इससे निपटने के लिए पेश है राजीव गांधी अस्पताल के निदेशक डॉ. बीएल शेरवाल से बातचीत के प्रमुख अंश :-

प्रश्नः- दिल्ली में तीसरी लहर आने की कितनी संभावना है..?

उत्तरः- यह तो नहीं कहा जा सकता कि दिल्ली में तीसरी लहर की कितनी संभावना है। लेकिन, दूसरे देशों में तीसरी लहर को देखते हुए ये कह सकते हैं कि यह आएगी ज़रूर। मेरा अनुमान है कि यह 15 अगस्त के बाद हो सकता है। दिल्ली में कोरोना का संक्रमण धीरे-धीरे बढ़ना शुरू हो सकता है क्योंकि कोरोना की एंटीबॉडी चार माह में कम होने लगती है। अप्रैल मई में लोगों के शरीर में जो एंटीबॉडी विकसित हुई वह घट सकती है। इस वजह से मामले बढ़ सकते हैं और सितंबर से अक्तूबर के मध्य में अधिक संक्रमण हो सकता है। हालांकि टीकाकरण और लोगों की जागरुकता से इसकी गति धीमी होने की उम्मीद है। तीसरी लहर से निपटने के लिए अस्पतालों में पूरी तैयारी है इसलिए घबराने की ज़रूरत नहीं है, बस सतर्क रहने की आवश्यकता है।

राजीव गांधी अस्पताल में होल्डिंग एरिया को 30 बेड के आइसीयू वार्ड में बदल दिया गया है ताकि आते ही गंभीर मरीज़ को तुरंत आईसीयू की सुविधा मिल सके। साथ ही अस्पताल में 2500 लीटर प्रति मिनट क्षमता का एक ऑक्सीजन प्लांट लगाया जा चुका है। इसके अलावा एक हजार लीटर प्रति मिनट क्षमता का एक और प्लांट लगाने की तैयारी है। वहीं, पहले से स्थापित 10 किलो लीटर क्षमता के भंडार टैंक की क्षमता भी 20 किलोमीटर करने की तैयारी है।

प्रश्नः- क्या तीसरी लहर दूसरी हर से अधिक घातक हो सकती है?

उत्तरः- नहीं, दूसरी हर के समय काफी कम लोगों को टीका लगा था। साथ ही अस्पतालों में ऑक्सीजन सहित अन्य कई व्यवस्थाओं की कमी थी। इसकी वजह से दूसरी लहर ज़्यादा घातक साबित हुई। साथ ही दूसरी लहर के दौरान करीब 33 प्रतिशत संक्रमण दर होने पर 20 अप्रैल को दिल्ली में संपूर्ण लॉकडाउन लगाया गया लेकिन इस बार सरकार ने पांच प्रतिशत संक्रमण दर होने पर ही लॉकडाउन लगाने की बात कही है। इसएिल इस बार ज़्यादा मामले नहीं बढ़ेंगे, ऐसी उम्मीद है।

प्रश्नः- तीसरी लहर को लेकर राजीव गांधी और चाचा नेहरु अस्पताल में क्या तैयारियां की गई हैं?

उत्तरः- राजीव गांधी अस्पताल में होल्डिंग एरिया को 30 बेड के आइसीयू वार्ड में बदल दिया गया है ताकि आते ही गंभीर मरीज़ को तुरंत आईसीयू की सुविधा मिल सके। साथ ही अस्पताल में 2500 लीटर प्रति मिनट क्षमता का एक ऑक्सीजन प्लांट लगाया जा चुका है। इसके अलावा एक हजार लीटर प्रति मिनट क्षमता का एक और प्लांट लगाने की तैयारी है। वहीं, पहले से स्थापित 10 किलो लीटर क्षमता के भंडार टैंक की क्षमता भी 20 किलोमीटर करने की तैयारी है। चाचा नेहरू अस्पताल में बच्चों के इलाज के लिए कुल 250 बेड की व्यवस्था की गई है। इनमें से 100 बेड को आइसीयू बेड बनाया जा रहा है। राजीव गांधी अस्पताल में 325 आइसीयू बैड तैयार किए गए हैं।

प्रश्नः- राजीव गांधी अस्पताल में दूसरी लहर के दौरान ऑक्सीजन बेड कम पड़ने लगे थे। इस बार क्या व्यवस्था की गई है ताकि तीसरी लहर के दौरान ऐसी समस्या न हो?

उत्तरः- दूसरी लहर के दौरान अस्पताल में जो ऑक्सीजन पाइपलाइन थी उसकी प्रेशर क्षमता एक से दो लीटर प्रति मरीज़ थी। लेकिन, कोरोना मरीज़ों के लिए अचानक ऑक्सीजन की आवश्यकता 15 लीटर प्रति मरीज़ हो गई। इसकी वजह से समस्या होने पर बेड कम करने पड़े थे। लेकिन, अब ऑक्सीजन की पाइपलाइन की आपूर्ति क्षमता भी बढ़ाई जा रही है। इस बार ऐसी कोई समस्या नहीं होगी।

प्रश्नः- दूसरी लहर के दौरान कई दवाईयों की कमी देखने को मिली थी। इससे रेमडेसिविर, टासिलीजुबैम और एंफोटेरिसिन बी इंजेक्शन की जमकर कालाबाज़ारी हुई। तीसरी लहर में ऐसा न हो इसके लिए क्या तैयारी है..?

उत्तरः- मेरा मानना है कि म्यूकरमाइकोसिस के इंजेक्शन एंफोटेरिसिन बी के अलावा दिल्ली में और किसी दवाई की कमी नहीं थी। जिन दवाईयों की कमी की बात कही जा रही है उन दवाईयों का इस्तेमाल विकल्प के तौर पर किया जा रहा था। इससे लोगों के बीच में यह संदेश गया कि ये दवाईयां अधिक कारगर हैं और वह खुद अपने मरीज़ों को रेमडेसिविर, टासिलीजुबैम आदि देने के लिए कहने लगे। इस वजह से इन दवाईयों का ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल हुआ। इससे इंटरनेट मीडिया पर भी एक माहौल बना। इसका दवा कंपनियों ने फायदा उठाया, जबकि रेमडेसिविर को आइसीएमआर ने इलाज के प्रोटोकॉल से भी हटा दिया गया है।

प्रश्नः- तीसरी लहर को देखते हुए डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की कमी न हो इसके लिए क्या व्यवस्था की गई है?

मेरा मानना है कि म्यूकरमाइकोसिस के इंजेक्शन एंफोटेरिसिन बी के अलावा दिल्ली में और किसी दवाई की कमी नहीं थी। जिन दवाईयों की कमी की बात कही जा रही है उन दवाईयों का इस्तेमाल विकल्प के तौर पर किया जा रहा था। इससे लोगों के बीच में यह संदेश गया कि ये दवाईयां अधिक कारगर हैं और वह खुद अपने मरीज़ों को रेमडेसिविर, टासिलीजुबैम आदि देने के लिए कहने लगे। इस वजह से इन दवाईयों का ज़रूरत से ज़्यादा इस्तेमाल हुआ।

उत्तरः- सरकार द्वारा ज़रूरत के हिसाब से डॉक्टरों और स्वास्थ्यकर्मियों की भर्ती करने की छूत पहले ही दे गई है। दूसरी लहर के समय भी आवश्यकतानुसार भर्ती की गई थी। अभी ज़रूरत नहीं है तो कुछ लोगों को कम कर दिया गया है। ज़रूरत पड़ने पर उन्हें फिर रखा जाएगा। साथ ही दिल्ली सरकार ने आइपी विश्वविद्यालय के साथ मिलकर बड़ी संख्या में स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के रूप में युवाओं को प्रशिक्षण दिया हैं ज़रूरत पड़ने पर उनकी भी मदद ली जाएगी। ❑❑

कोरोना के बाद जानलेवा कैंसर से भी बचाएगी एमआरएनए वैक्सीन : डॉ॰ कुक

वैज्ञानिक कुछ किस्म के कैंसर का कारण वायरस को मानते हैं। इसलिए वे एमआरएनए कैंसर टीके का टेस्ट भी कर रहे हैं। फाइजर बायोनटेक और मॉडर्ना की एमआरएनए वैक्सीन पहली बार कोरोना से बचाव के लिए इस्तेमाल की गई थी हालांकि, एमआरएनए टेक्नोलॉजी कई वर्ष से विकसित की जा रही थी। जिन बीमारियों के लिए इसका परीक्षण किया जा रहा था, उनमें से एक कैंसर भी थी। आइए जानते है। इसके बारे में हयूस्टन मेथोडिस्ट हॉस्पिटल के विशेषज्ञ डॉ. जॉन कुक के विचार।

प्रश्नः- एमआरएनए टैक्नोलॉजी क्या हैं?

उत्तरः- अमेरिका के ह्यूस्टन मैथोडिस्ट हॉस्पिटल के विशेषज्ञ डॉ. जॉन कुक कहते हैं कि एमआरएनए (मैसेंजर रीबोन्यूक्लिक एसिड) कैंसर को पहचानने के लिए इम्यून सिस्टम विकसित करने का तरीक़ा है। ब्रिटिश कोलंबिया यूनिवर्सिटी की विशेषज्ञ अन्ना ब्लैकनी कहती हैं कि एमआरएनए वैक्सीन कैंसर की कोशिकाओं पर मौजूद प्रोटीन की पहचान करती हैं। साथ ही इम्यून सिस्टम को उससे मुक़ाबला करने के योग्य बनाती हैं।

प्रश्नः- किस तरह के कैंसर में एमआरएनए वैक्सीन प्रभावी हो सकती है?

उत्तरः- अमेरिकी विशेषज्ञ डॉ. कुक के मुताबिक मेलनोमा जैसे कैंसर के मामलों में यह वैक्सीन प्रभावी हो सकती है। एमआरएनए टेक्नोलॉजी से मेलनोमा कैंसर मरीज़ों में होने वाले सामान्य बदलाव को पता लगाया जा सकता है। बायोनटेक ने यही तरीक़ा अपनाया है। उसने कैंसर से जुड़े चार खास एंटीजन की पहचान की है। मेलनोमा के 90प्रतिशत से ज़्यादा मरीज़ों में इनमें से कम से कम एक एंटीजन होता है।

प्रश्नः- क्या एक ही प्रकार के कैंसर के ही मरीज़ में एक ही तरह का वैक्सीन प्रभावी होगा?

उत्तरः- हावर्ड के डेना-फार्बर कैंसर इंस्टीटयूट में फिजिशियन साइंटिस्ट डेविड ब्राउन कहते हैं कि कैंसर के हर मरीज़ में अलग अलग बदलाव होते हैं। ऐसे बदलाव काफी कम हैं जो सभी कैंसर मरीज़ों में एक जैसे हों। वायरस हर मरीज़ के इम्यून सिस्टम पर अलग अलग तरीके से हमला करता है। भले ही इन सभी मरीज़ों को एक ही तरह का कैंसर हो। इसलिये अलग अलग मरीज़ों की स्थिति के हिसाब से वैक्सीन बनाने होंगे।

प्रश्नः- कैंसर मरीज़ों में अलग अलग बदलाव का पता कैंसे चलता है?

उत्तरः- डॉ. कुक कहते हैं कि एक ही तरह के कैंसर मरीज़ों में अलग-अलग बदलाव का पता लगाना संभव है। इसके लिए मरीज़ के टयूमर के डीएनए और आरएनए की जांच की जाती है। फिर इनकी तुलना सामान्य कोशिकाओं से की जाती है। ऐसा कर बदलाव के अंतर का पता लगाया जा सकता है।

प्रश्नः- कैंसर का टीका बनाने का काम कहां तक पहुंचा?

उत्तरः- हयूस्टन मेथोडिस्ट हॉस्पिटल में कैंसर बायोलॉजिस्ट का एक समूह ऐसे लोगों के लिए वैक्सीन बना रहा है, जिन्हें कैंसर होने का जोखिम ज़्यादा है। इनमें बीआरसीए 2 म्यूटेशन वाले लोग शामिल हैं। ऐसे लोगों को स्तन कैंसर होने का ज़्यादा जोखिम रहता है। इसी तरह हावर्ड के डेना फार्बर कैंसर इंस्टीटयूट में भी कैंसर वैक्सीन पर काम चल रहा है। बताया जा रहा है कि मॉडर्ना की एमआरएनए थैरेपी को करीब 48 घंटे में ही अन्तिम रूप दिया गया इसके साथ ही दुनिया में 150 से अधिक नए एमआरएनए वैक्सीन और ट्रीटमेंट को डेवलप किया जा रहा है। ❑❑

तिरंगा प्यारा

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा
सदा शक्ति बरसाने वाला
प्रेम सुधा बरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन-मन सारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा

स्वतंत्रता के भीषण रण में
लखकर जोश बढ़े क्षण-क्षण
कांपे शत्रु देखकर मन में
मिट जावे भय संकट सारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा

इस झंडे के नीचे निर्भय
हो स्वराज जनता का निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता ही ध्येय हमारा
झंडा ऊंचा रहे हमारा

हिन्दुस्तान हमारा

सारे जहाँ से अच्छा, हिन्दुस्तां हमारा,
हम बुलबुले हैं उसकी, वो गुलसितां हमारा

परबत हो सबसे ऊँचा हमसाया आसमां का
वो संतरी हमारा वो पासबां हमारा,

गोदी में खेलती हैं जिसकी हज़ारों नदियाँ
गुलशन है जिनके दम से, रश्के जिनों हमारा

मज़हब नहीं सिखाता आपस में बैर रखना
हिन्दी है, हम वतन है, हिन्दुस्तान हमारा

सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तान हमारा

आज़ाद हिन्दुस्तान में सहयोग और मित्रता की भावना, इस्लामी तालीमात के रोशनी में

इसमें कोई शक नहीं कि सेकुलरिज़्म हिन्दुस्तान जैसे विभिन्न धर्मों, भाषाओं और बहुत सी संस्कृतियों वाले देश की अहम ज़रूरत है और इस देश का इत्तेहाद इसी बंधन में बंधा हुआ है वरना हिन्दुस्तान की क़दीममाजी की रवाना जगियां इस देश के टुकड़े-टुकड़े करा देगी। लेकिन सेकुलरिज़्म की आम ज़रूरत के अलावा हिन्दुस्तानी मुसलमानों के लिये खासतौर पर यह राजनीतिक अवधारणा बहुत महत्व रखती है। हिन्दू बुद्धिजीवियों ने यह कहकर बड़ी हद तक अपने सम्प्रदाय को गृहयुद्ध से बचा लिया कि हिन्दू धर्म कोई धर्म नहीं है बल्कि एक समाज है जिसमें विभिन्न विचार रखने वाले और एक दूसरे के विपरत विचार रखने वाले वर्ग शामिल हैं।

परन्तु मुसलमान अपने साम्प्रदायिक धार्मिक मतभेदों को खूनरेज टकराव से बचाने के लिये इस हद तक नहीं जा सकते क्योंकि सारे धर्मों में सबसे अन्त में आने वाला धर्म है और इस कारण इस्लाम उसूल व फरोग़ और अक़ायद व इबादत का एक मुकम्मल ज़ाब्तये क़ानून है। इब्तदाई मजाहिब में इतना कंट्रोल मुश्किल था इसलिये इन धर्मों को समाजी दायरों की शक्ल देना आसान है। अलबत्ता इस्लाम एक मुकम्मल कानून ज़िन्दगी होने के बावजूद धार्मिक मतभेदों में रवादारी, आजादी राय और एक दूसरे की दिल आज़ारी से मुकम्मल दूरी मज़हबी पेशवाओं के साथ अदब और एहतराम का मामला हर कौ़म के सियासी और समाजी नेताओं को भी वही सम्मान देना जो इन्हें इनकी कौ़म में हासिल है इस्लाम की अहम शिक्षा का हिस्सा है।

वह मुस्लिम देश जिनके नेता अपनी ग़रीब और पिछड़ी जनता को जागीरदाराना निज़ाम, पूंजीवादी अर्थव्यवस्था और सोने चांदी में खेलने वाली धार्मिक शख़्सियत के अत्याचार के चंगुल में दबाये रखने के लिये धार्मिक सरकार की मुनाफाखाना नारेबाजी करते हैं। इनके तर्ज़े अमल ने इस्लाम की इस रवादाराना तालीम को रूसवा कर रखा है। पड़ौसी देश की धार्मिक रवानाजंगी इस देश के राजनीतिक नेताओं की पैदा की हुई है, इन नेताओं और पार्टियों ने मुसलमानों के विभिन्न धार्मिक फिरक़ों को शय देकर आपस में लड़ा रखा है। बाहर से देखने वाला यकीन नहीं कर सकता कि इस्लाम धार्मिक मतभेदों में एक रवादार और सहिष्णु धर्म है। किसी ग़ैर मुस्लिम बुद्धिजीवी को हम विश्वास नहीं दिला सकते कि इस्लाम एक नाजुक तरीन मसले पर किस खूबी के साथ काबू पाता है। हर व्यक्ति अपनी धार्मिक अवधारणा पर पूरी तरह क़ायम है और इसके बावजूद दूसरों के इस हक़ को भी मानेगा कि उन्हें भी अपने दीन धर्म पर क़ायम रहने का हक़ है। मौलाना अबुल कलाम आजाद ने कितने प्रभावी ढंग से यह बात कही है, फरमाते हैं कि दो हक़ है और दोनों को अपनी सीमाओं में रहना चाहिये एक हक़ तज़कीर व तब्लीग़ का है कि जिस बात को ठीक समझता है इसे दूसरों को भी समझाये बल्कि इसका हक़ नहीं है कि दूसरों के हक़ से इंकार कर दे यानि यह बात भुला दे कि जिस तरह एक बात के मानने न मानने का हक़ है ऐसा ही दूसरों को भी मानने न मानने का हक़ है और एक फर्द दूसरे के लिये ज़िम्मेदार नहीं। (तर्जुमानुल कुरआन सं॰ 174)

विरोधियों की तरफ से सावधान रहना एक अलग बात है लेकिन हीनता की भावना से खुद को ग्रस्त करके विरोधियों की इच्छा पूरी करना यह अलग बात है जिसे इस्लाम पसंद नहीं करता, कुरैश मक्का ने जब हुज़ूर सल्ल॰ और आपके साथियों को हुदैबिया के स्थान पर उमरा अदा करने से रोका तो कुछ मुसलमानों के दिल में बदले का जोश पैदा हुआ और यह कहा जाने लगा कि हम कुरैश मक्का के तिजारती काफ़िलों को मदीना मुनव्वरा की तरफ से गुज़रने नहीं देंगे और इनको मुल्क शाम की तिजारत से रोक देंगे। इस इरादा पर यह आयत नाज़िल हुई और मुसलमानों को हिदायत दी गई ''ऐ मुसलमानों तुम्हें किसी कौम की दुश्मनी इस बात पर आमादा न कर दे कि तुम इसके साथ न्याय से काम न लो, तुम्हें हर हाल में न्याय करना है और तक़वा यही है कि न्याय पर कायम रहो, दुश्मन के साथ भी और दोस्त के साथ भी। (*अलमायदा* : 8)

मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी ने इस हिदायतें खुदावंदी से पैदा होने वाले संदेह को दूर करते हुये अपनी तफसीर में लिखा है ''मुमकिन है किसी को यह शुब्ह गुज़रे कि ऐसे दुश्मनों के हक़ में इस कदर रवादारी की तालीम कहीं मौजूदा राजनीतिक उसूलों के ख़िलाफ़ तो न होगी क्योंकि ऐसा नर्म व्यवहार देखकर मुसलमानों के ख़िलाफ़ शरीरों और बदबातिनों का साहस बढ़ जाने की पूरी संभावना है इसलिये इसका जवाब यह कहकर दिया कि मोमिन की सबसे बड़ी सियासत तक़वा व तवक्कुल है खुदा से डरने का मतलब यह है कि ज़ाहिर और बातिन में अपना मुआमला साफ रखो और जो अहद व क़रार किये हैं उनमें पूरी वफादारी दिखाते यहां फिर किसी से कोई ख़तरा नहीं।

कुरआन करीम की मशहूर आयत है ''मुस्लिमों जिन चीजों को यह अहले शिर्क अल्लाह के सिवा पूजते हैं इन्हें गालियां न देना अगर ऐसा हो तो ये लोग अनाद की वजह से बेजाने बूझे अल्लाह तआला को बुरा कहने लगे।'

खुलासा कलाम यह कि रसूल अल्लाह सल्ल॰ की ज़बान मुबारक और कुरआन करीम में न तो ऐसा कलाम आया था जिसे लोग गाली समझें और न आईन्दा आने का खतरा था हां मुसलमानों से इसका इमकान था इनको इस आयत ने ऐसा करने से रोक दिया था क्योंकि बातिल माबूदों (असनाम आदि) को शिर्क की तरदीद के तौर पर बुरा कहना कम से कम जायज़ तो ज़रूर है मगर क्योंकि इसके नतीजे में यह अंदेशा ज़ाहिर हो गया कि लोग खुदा को बुरा कहेंगे तो इन फर्ज़ी खुदाओं को बुरा कहने वाले इसका सबब बन जायेंगे इसलिये जायज़ बात को भी नाजायज़ क़रार दे दिया गया।

हदीस रसूल के द्वारा एक बहुत ही आम फहम मिसाल सामने आई है आप ने फरमाया कि कोई अपने मां-बाप को गालियां न दिया करे, सहाबा कराम ने फरमाया कि या रसूल अल्लाह सल्ल॰ कोई भी आदमी ऐसा नहीं कर सकता, आपने फरमाया ठीक कहते हो लेकिन कोई जब किसी के मां बाप को गाली देता है तो वह जवाब में उसके मां-बाप को गाली देता है तो यह ऐसा ही है कि जैसे उसने खुद अपने मां-बाप को गाली दी हो। कुरआन ने कहा किसी का दिल न दुखाओ तानाज़नी न करो, कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है भलाई और नेकी के कामों में एक दूसरे से सहयोग करो (मायदा) हर इंसान के साथ पड़ोस का रिश्ता क़ायम करते हुये, कुरआन ने कहा रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ और थोड़ी देर के लिये भी साथ वाले पड़ौसी के साथ अच्छा सलूक करो। एक आफाकी उम्मत और अंतर्राष्ट्रीय हैसियत रखने वाली खैर उम्मत के अंदर सहयोग एवं मित्रता की भावना की ज़रूरत है। गैरयत ओर नफरत का अहसास पैदा करने की ज़रूरत नहीं है।❑❑

आर्कियोलॉजी के क्षेत्र में कैरिअर की उजली संभावनाएं

इतिहास अर्थात् बीते हुए समय की लम्बी दास्तान और इसी इतिहास को पूरे विश्व में विभिन्न दृष्टिकोणों से बार-बार परखा जाता रहा है। उनमें से कई दृष्टिकोण ऐसे हैं जो पूर्वाग्रहों की बुनियाद पर अपनाए जाते हैं और फिर फैक्टस या तथ्यों को तोड़-मरोड़कर उनका ऐसा इंटरप्रेटेशन किया जाता है कि झूठ सच की शक्ल ले लेता है। बीते हुए काल की व्याख्या में अक्सर मतभेद होते रहे हैं। इस समस्या का एकमात्र हल है आर्कियोलॉजी अर्थात् पुरातत्व विज्ञान, जिसका काम मौजूदा साक्ष्यों के आधार पर बीते हुए कल यानि इतिहास की सच्चाई उजागर करना है। यह सच बताने वाले लोग विशेष योग्यता हासिल होते हैं और इसमें युवाओं के लिए कैरिअर की बहुत चमकीली संभावनाएं विद्यमान हैं।

क्या है आर्कियोलॉजी

ध्यातव्य है कि आर्कियोलॉजी में एंथ्रोपोलॉजिकल अध्ययन किया जाता है, जिसके तहत प्राचीन मानव संस्कृति को खंगाला जाता है। आर्कियोलॉजी प्राचीन मानव के सांस्कृतिक आचार व्यवहार को व्याख्यायित करता है। इसके लिए पुरानी सभ्यताओं द्वारा छोड़ी गई चीज़ों गई और खंडहरों, उनकी गतिविधियों, व्यवहार आदि का अध्ययन करता है।

आर्कियोलॉजी ऐतिहासिक खोज की यह शाखा है, जो विशुद्ध रूप से वैज्ञानिक हैं। इसमें प्राचीन अवशेषों से सामना होता है। मसलन प्राचीन सिक्के, बर्तन, चमड़े की किताबें, भोजपत्र पर लिखित पुस्तकें, शिलालेख मिट्टे के नीचे दफन शहरों के खंडहर या फिर पुराने क़िले, मंदिर, मस्जिद और हर प्रकार के प्राचीन अवशेष, वस्तुओं आदि का अध्ययन आर्कियोलॉजी के अंतर्गत किया जाता है। आर्कियोलॉजीकल मान्यूमेंटस, आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स, काईन, सील, बीड, लिट्रेचर और नेचुलर फीचर्स के संरक्षण एवं प्रबंधन का कार्य आर्कियोलॉजीकल के तहत आता है। आर्कियोलॉजीकल न केवल इन चीज़ों का ज्ञान रखता है बल्कि उनकी खोज भी करता है।

क्या होता है कार्यक्षेत्र

आर्कियोलॉजिस्ट प्राचीन भौतिक अवशेषों की खोज करते हैं, उनका अध्ययन/परीक्षण करते हैं और फिर अपने तार्किक निष्कर्ष के आधार पर इतिहास की सटीक व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। इस प्रक्रिया के कारण जहां एक ओर दुनिया को इतिहास की सही जानकारी प्राप्त होती है वहीं अंधविश्वास और ग़लतफहमियों का निपटारा भी इस प्रकार की महत्वपूर्ण पुरातात्विक खोजों से संभव होता है। समय-समय पर पुरातात्विक दस्तावेज़ और वस्तुएं खोजी जाती रही हैं जो विगत का सही-सही लेखा जोखा प्रस्तुत करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है और हमें और अधिक वैज्ञानिक ज्ञान प्रदान करती है। आर्कियोलॉजकल साइंस हमें ऐतिहासिक अधंविश्वासों और पूर्वाग्रहों से निजात दिलाकर वास्तविक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

कैसे बढ़ें आगे

अगर आप इतिहास को खंगालने के शौक़ीन हैं और इसके ज़रिए कई तरह की नई चीज़ों का पता लगाना चाहते हैं तो आर्कियोलॉजी के क्षेत्र में आपके लिए कैरिअर की बहुत उजली संभावनाएं हैं। आर्कियोलाजी में कैरिअर बनाने के लिए उन विद्यार्थियों को आगे आना चाहिए जो लुप्त समाज, सभ्यताओं उनके इतिहास तथा अवशेषों के बारे में जानने में गहरी रुचि रखते हैं। आर्कियोलॉजिस्ट बनने के लिए आपको तीन वर्षी डिग्री (बीए इन आर्कियोलाजी) करनी होगी, जिसके लिए 12वीं स्तर पर एक विषय के रूप में इतिहास की पढ़ाई आवश्यक है। यदि आगे आप एमए इन आर्कियोलॉजी करना चाहते हैं, तो इसकी न्यूनतम योग्यता बीए इन आर्कियोलॉजी या समकक्ष है। इस क्षेत्र के लिए कम्युनिकेशन और आईटी स्किल की भी बहुत ज़रूरत है।

प्रमुख संस्थान

स्कूल ऑफ अर्काइवल स्टडीज, नेशनल आर्काइवज ऑफ इंडिया, जनपथ नई दिल्ली।

स्नातक और स्नातकोत्तर पाठयक्रम के लिए :-

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार। ❑ गुजरात विद्यापीठ, आश्रम रोड, अहमदाबाद। ❑ बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी। ❑ कोलकाता विश्वविद्यालय, सीनेट हाउस, 87 कॉलेज स्ट्रीट कोलकाता। ❑ हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, गढ़वाल उत्तराखंड। ❑ पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़। ❑ कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र ❑ दिल्ली इंस्टीटयूट ऑफ हेरिटेज रिसर्च एंड मैनेजमेंट नई दिल्ली। ❑ महर्षि दयानंद सरस्वती विश्व विद्यालय, अजमेर। ❑ जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर। ❑ डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर।❑❑

75वां यौमे आज़ादी

आज़ादी की क़ीमत

क्या क़ीमत है आज़ादी की हमने कब यह जाना है,
अधिकारों की ही चिंता है फर्ज़ कहां पहचाना है,
आज़ादी का अर्थ हो गया अब केवल घोटाला है,
हमने आज़ादी का मतलब भ्रष्टाचार निकाला है,
आज़ादी में खा जाते हम पशुओं तक के चारे,
'झूठा विकास' और 'हवाला' अब हमको आज़ादी से प्यारे है,
आज़ादी की क़ीमत कहां हमने जाना है।

तिरंगा प्यारा

तिरंगा हमारा है शान-ए-ज़िन्दगी
वतन परस्ती है वफ़ा-ए-ज़मीं
देश के लिए मर मिटना क़ुबूल है हमें, भारत की एकता बनाए रखने का जुनून है हमें।

तिरंगा प्यारा

ये बात हवाओं को बताये रखना,
रोशनी होगी चिरागों को जलाये रखना,
लहू देकर जिसकी हिफाज़त हमने की,
ऐसे तिरंगे को सदा दिल में बसाये रखना

प्यारा-प्यारा देश

प्यारा-प्यारा मेरा देश,
सबसे न्यारा मेरा देश
दुनिया जिस पर गर्व करे,
ऐसा सितारा मेरा देश
चांदी, सोना, मेरा देश,
सफल सलोना मेरा देश,
गंगा जमुना की माला का,
फूलों वाला मेरा देश,
आगे जाए मेरा देश,
नित नए मुस्काएं मेरा देश
इतिहास में बढ़-चढ़ कर,
नाम लिखाये मेरा भारत देश।

जय हिन्द

न जाति न भाषा देखा
सबको अपना मीत बनाया
हो बांग्लोदश या पाकिस्तान
हमने सबको गले लगाया
दी शरण हमने सबको
जब कोई संकट आया
भूखे रहकर भी हमने
पड़ोसी को खाना खिलाया

तिरंगा प्यारा

देखो बच्चों झंडा प्यारा,
तीनों रंगों का मेल है सारा
सदा रहे यह झंडा ऊंचा
आकाश को रहे यह झंडा छूता
सदा करो तुम इसका मान,
कभी न करना इसका अपमान,
झंडा ही है देश की शान,
बना रहे यह सदा महान

तहरीके रेशमी रूमाल आंदोलन आज़ादी का एक प्रमुख अध्याय

हम पूरे हर्षोल्लास एवं परम्परागत तरीक़े के साथ अपने प्यारे वतन हिन्दोस्तान की आज़ादी की वर्षगांठ मना रहे हैं, लेकिन क़ाबिले ज़िक्र बात यह है कि हमारे आज के इतिहास में स्वतंत्रता आंदोलन के जो अध्याय दर्ज हैं वह बहुत कम और अधूरे हैं। इतिहास के ऐसे भी पन्ने हैं जिन्हें भेदभाव पक्षपात की चादर में लपेट कर सामान्यत: भुलाने के प्रयास किए गए हैं और भारतीय इतिहास की किताबों से इन्हें नदारद कर दिया गया है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की जो दास्तां आज हम आपको बताने जा रहे हैं वह शेखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन देवबंन्दी (रह॰) (1852–1920) के बड़े संघर्ष से शुरू होती है।

रेशमी रूमाल आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता का एक सुनियोजित गुप्त एवं महत्वपूर्ण अध्याय है जिसका भेद दुर्भाग्य से प्लान के पूरा होने से पहले ही खुल गया था। परिणामस्वरूप इस अभियान के नेताओं सहित सैकड़ों उलेमा और स्वतंत्रता सेनानियों को क़ैद की यातनाएँ झेलनी पड़ीं। हज़ारों लोगों को भयानक मौत की सज़ा दी गयी और अनगिनत लोगों को माल्टा की क़ैद में डाल दिया गया।

दारूल उलूम देवबन्द के पहले विद्यार्थी हज़रत शेखुल हिन्द ने 1877 में शमरतुल तरबियत के नाम से एक संस्था स्थापित की जिसका उद्देश्य ब्रिटेन सरकार के ख़िलाफ़ एक सशस्त्र बग़ावत की तैयारी करना था, यह संस्था तीस सालों तक क़ायम रही लेकिन 1880 में हज़रत मौलाना मौहम्मद क़ासिम नानौतवी (रह॰) की मत्यु से संस्थागत ढांचे में ऐसा खालीपन आया जिसकी वजह से संस्था का उद्देश्य बिखरता हुआ नज़र आने लगा। (माल्टा का क़ैदी पेज 32) इसलिए 1909 में हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) ने अपने कार्यकर्ताओं को जमीयतुल अंसार के नए बैनर तले जोड़ा इस नई संस्था के प्रबंध मामलों को संभालने के लिए मौलाना उबैदुल्ला सिंधी (रह॰) को देवबंद बुलाया गया। (उबैदुल्लाह सिंधी की निजी डायरी)

पहली बार जमीयतुल अंसार की घोषणा 1911 में दारूल उलूम देवबंद के वार्षिक सम्मेलन में की गयी और अविभाजित हिन्दोस्तान और बाहर के तीस हजार प्रसिद्ध उलमाओं के सामने इसके उद्देश्यों के अलावा जंगे आज़ादी की ज़रूरत को पेश किया गया, संस्था के सफल शुभारम्भ और जनता की ओर से भरपूर समर्थन के विश्वास से हौंसला पाकर जमीअतुल अंसार ने अप्रैल 1911 में पहली सरकार विरोध ी रैली मुरादाबाद में निकाली। अलीगढ़, लखनऊ और देवबंद से भाग लेने वालों का एक बड़ा समूह जमा हो गया। ब्रिटेन सरकार के ख़िलाफ़ सफल जन गतिविधि के प्रकटीकरण के लिए आम अधिवेशन आयोजित किया गया जिसमें मेरठ और आसपास के हज़ारों लोगों ने पूरे जोश व खरोश के साथ भाग लिया। जमीअतुल अंसार ने जिस क़दर जन शक्ति का प्रदर्शन किया, उसने ब्रिटेन सरकार की जड़ों को हिलाकर रख दिया। इसलिए सत्ता के कर्णधारों ने इस शक्ति के मुख्य स्रोत दारूल उलूम देवबंद को ही निशाना बना लिया जहां से इस तरह की शक्तिशाली संस्था ने जन्म लिया था और 1913 में जमिअतुल अंसार पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) को अब दारूल उलूम के सम्मान व अस्तित्व की चिन्ता हुई। इसलिए उन्होंने संस्था के सरगर्म सदस्यों से अपनी सदस्यता को समाप्त करने को कहा ताकि दारूल उलूम देवबंद पर कोई आंच न आए। (*उलमाए हक़ जिल्द 1, पेज 31*)

जमियतुल अंसार पर प्रतिबंध के तुरंत बाद भारत की आज़ादी के मतवाले एक नए नाम नज़ारतुल मआरिफ के साथ दिल्ली में इकटठा हुए।

मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी (रह॰) और हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) इस नए बैनर के प्रमुख थे। इस नई संस्था की आत्मा और इसका उद्देश्य सिर्फ भारत की आज़ादी था। सेनानियों ने जहां इस संस्था को दिल्ली तक पहुंचने के लिए माध्यम के तौर पर प्रयोग किया वहीं यह आम सम्पर्क और आर्थिक ऐतबार से भी काफी कारामद रही। मौलाना मौहम्मद अली जौहर (रह॰), मौलाना अबुल कलाम आज़ाद (रह॰), मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी (रह॰) और हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) इसी संस्था में गुप्त मुलाक़ात किया करते थे। (असीराने माल्टा, पुस्तक)।

जब जर्मनी और ब्रिटेन के बीच पहली विश्व जंग शुरू हुई तो स्वतंत्रता सेनानियों ने अपना कार्य करने का तरीक़ा बदल दिया उन्होंने देश के अंदर की गतिविधियों से ध्यान हटा लिया और पूरे तौर पर जर्मनी का साथ देने लगे। (नक्शे हयात)।

यह विश्व युद्ध स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक सुनहरा अवसर था जब वह ब्रिटेन के स्वार्थों, हितों की जड़ों को खोखला कर सकते थे, इसलिए उन्होंने ब्रिटेन सरकार के विरूद्ध सशस्त्र बग़ावत का प्लान बनाया। हाजी साहब तरंग ज़ई और मौलाना सैफुर्रहमान काबुली, हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) के कर्ताधर्ता संस्था के सदस्य थे।

बाक़ी पेज 11 पर

यौमे आज़ादी पर अपना आत्मवलोकन भी करें हम

विभिन्न कठिन परीक्षा के कड़े दौर और अग्नि परीक्षा से गुज़रने के बाद हमें आजादी नसीब हुई। इस मातृभूमि से कितने ही वीर शहीद हुए। कितनी मांओं की गोद खाली हुई, कितने ही देशवासियों ने मौत को गले लगाया, कितने ही सपूत मातृभूमि पर क़ुर्बान हो गए। एक दो वर्ष नहीं पूर्व के दो सौ वर्ष के इतिहास में कितने ही शीर्षक हैं जो सिर्फ बहादुरों के ख़ून से लिखे गए हैं। यह सारे हमारे देश के जनसेवक, सम्मानीय और क़ौम व देश के जांनिसार थे।

इस क़ाफिले में सब मिलजुल कर चले। सबने एक साथ मरना जीना सीखा। सबकी एक तड़प और सबकी एक मंज़िल थी इसमें कोई अन्तर शेष न बचा था इसमें हिन्दू मुसलमान, सिक्ख, इसाई, सब भाई भाई थे, यह इस वक्त का कोई खोखला नारा नहीं था बल्कि इन्क़्लाब ज़िन्दाबाद की आवाज ने सब खानों भेदों को मिटा दिया था और लगता था कि विभिन्न शरीरों में एक ही लगन है। इस क़ाफिले में असीर माल्टा हज़रत शेखुल हिन्द मौलाना महमूद अल हसन (रह॰) का दिले बेताब धड़कता था तो उसकी आवाज़ महात्मा गांधी, मौलाना अबुल कलाम आजाद, जवाहर लाल नेहरू, लाला लाजपतराय, डॉ. अंसारी, हकीम अजमल खां के होंठों से सुनी जाती थी। मौलाना मौ॰ अली जौहर जब गरज कर कहते थे कि मुझे गुलाम देश में वापस नहीं जाना है मुझे आज़ाद देश में क़ब्र की ज़मीन देनी होगी। हिन्दुस्तान के इस कोने से उस सिरे तक इसकी गूंज सुनी जाती और गोलमेज़ कांफ्रेंस ही नहीं दयारे ग़ैर की फिज़ा में एक तहलका मच जाता है। क्या जवान, क्या बच्चे सब एक ही सुर में कहते हैं- 'बोली अम्मा मौ॰ अली की! जान बेटा ख़िलाफ़त पे दे दो।'

आजादी का इतिहास लिखे हुए अभी कोई लम्बा समय नहीं गुज़रा। 75 वर्ष का ज़माना ऐसा नहीं होता कि हालात व वाक्यात के चेहरों पर धूल बैठ जाए। सदाक़तें समय की धुंध में छिप जाएं, मौहब्बत- नफरत में बदल जाए, दोस्ती-दुश्मनी में बदल जाए, निष्पक्षता भेदभाव की चादर ओढ़ ले। सच्चाईयां ख़त्म हो जाएं लेकिन अफसोस सद अफसोस जो कुछ नहीं होना था वही सब कुछ हो रहा है। जिसका तसव्वुर (कल्पना) तक नहीं किया जा सकता, वह वाक़ेआ बनकर सामने आ रहा है। मामूली से फासले ने क़यामत की दूरी पैदा कर दी है। राष्ट्रीय एकता साम्प्रदायिकता, संकुचिता के रंगों में लहू लुहान हो रही है।

एक समय था कि इधर जामिया मिल्लिया दिल्ली के नाम में इस्लामिया की बढ़ोत्तरी गांधी जी ने की थी और इसके सम्मान के लिए इनकी ज़िन्दगी समर्पित थी। दूसरी ओर शेखुल हिन्द (रह॰) की जमात के साथी भी करम चन्द को महात्मा गांधी का ख़िताब देकर अपने खर्च पर उन्हें देश का दौरा कराते और इनको इसी हैसियत से परिचित कराते थे। महात्मा गांधी अगर अल्पसंख्यक संहार के ख़िलाफ़ दिल्ली में मरण व्रत रखते थे तो शेख अब्दुल्ला कश्मीर में ग़ैर मुस्लिम बिरादराने वतन की हिफाज़त में जान की बाज़ी लगाते थे।

आज़ादी सिर्फ वक़्ती जोश का इज़हार नहीं था, वह बहुत सारे हुकूक़, फरायज़ बहुत सारी ज़िम्मेदारियां बहुत सारी नज़ाकतें, बरकतें और राहतें अपने दामन में लायी थीं। धर्म, तहरीर व तक़रीर की आजादी, नागरिक अधिकारों में समानता, साम्प्रदायिक सद्भाव एकता! एक दूसरे के दुख-दर्द में शिरकत सभी कुछ आज़ादी के साथ हमें मयस्सर (उपलब्ध) थी।

लेकिन अफसोस कि सारे ख़्वाब चकनाचूर हो गए। सारी मोहब्बत की दीवारें ढह गयीं। साम्प्रदायिकता के ज़हरीले नाग ने राष्ट्रीय एकता को डस लिया और अंतत: आग फैलते-फैलते हजारों लोगों को झुलसा गयी, हजारों लोगों का सम्मान ज़ख्मी हो गया। हज़ारों सीताएं रावण के चंगुल में गिरफ्तार हो गयीं। लाखों फूल मसले गए और लाखों कलियां मुरझा गयीं।

मेरे वतन के बहादुरों! आजादी की सुरक्षा करने वाले जियालों! शांति की स्थापना व इंसाफ़ के जिम्मेदारों! अबुल कलाम आजाद, पं. जवाहर लाल नेहरू और गांधी जी के उसूलों से प्यार करने वालों उठो! और उनकी बेचैन आत्मा को शांति दो, साम्प्रदायिकता को मिटाओ, देश को बचाओ।

15 अगस्त 1947 से बराबर हर वर्ष आता है और चला जाता है। ख़ुदा के लिए इस साल के 15 अगस्त को हक़ीक़ी आजादी की तारीख़ मनाओ!

हिन्दोस्तान ज़िन्दाबाद!

आज़ाद वतन पाइन्दाबाद!!

वर्तमान दौर के परिदृश्य में आज़ादी का इस्लामी स्वरूप क्या होना चाहिए

मौ. सालिम जामई

आज हम अपने प्यारे वतन की आज़ादी की 75वीं वर्षगांठ मना रहे हैं। आज़ादी का मतलब बिल्कुल स्पष्ट है किसी देश को उसी समय आजाद और स्वायत्त कहा जा सकता है जब वहां इस क़ौम की अपनी पसंद की सरकार क़ायम हो और किसी देश के नागरिकों को स्वतंत्र उसी समय माना जाएगा जब उन्हें देश में जीवन व्यतीत करने के मूलभूत अधिकार प्राप्त हों। आज़ादी का मतलब यह नहीं कि नागरिकों को अत्याधिक सीमा से अधिक छूट दे दी जाए और इन पर कोई रुकावट और प्रतिबंध न लगाया जाए क्योंकि ऐसी स्थिति में देश के अंदर अव्यस्था और अन्याय पैदा होगा और लोगों की ज़िन्दगी असुरक्षित हो जाएगी। बल्कि यह बात सरकार के फर्ज़ में शामिल होती है कि वह जनता को सुविधाएं देने के साथ-साथ देश में शांति व कानून बनाए रखने और सरकार चलाने के लिए कुछ ऐसे कानून बनाए जिन्हें देश में लागू किया जाए और कुछ ऐसी पाबंदियां लागू करे जिनके उल्लंघन पर जनता को सज़ा दी जाए। बिना शक सारे इंसान आजाद पैदा हुए हैं। इनकी आजादी स्वाभाविक है लिहाज़ा इन पर जुल्म व सितम करके गुलाम बनाना इंसानियत के ख़िलाफ़ जुल्म है चाहे वह गुलामी जिस्मानी हो या वैचारिक व फिक्री हो।

यह एक सच्चाई है कि अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मोहम्मद (सल्ल॰) ने इंसानियत को आज़ादी दिलायी। आप (सल्ल॰) ने लोगों को आख़िरत की शिक्षा के साथ साथ दुनियावी ज़िन्दगी गुज़ारने के तौर तरीके बतलाए। हक़ व बातिल के बीच फर्क को स्पष्ट किया। इनकी गर्दनों से मौजूदा दौर की क़ैद व बंदिशें और पूर्वजों की अंधी परम्पराओं को समाप्त किया।

इन हथकड़ियों और बेड़ियों से उन्हें छुटकारा दिलाया जो तथाकथित धार्मिक रहनुमाओं ने दीन व मज़हब के नाम पर इनके गले में डाल रखी थीं और उन्हें कुफ्र व ज़लालत और शिर्क व बुतपरस्ती से आजाद करके तौहीद ख़ालिस का रास्ता दिखाया। अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) का पहला मिशन आजादी ही था। इसलिए आप (सल्ल॰) एक उपदेशक की स्थिति में लोगों के बीच प्रकट हुए। क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला ने अपने नबी को हुक्म दिया -''ऐ नबी! आप लोगों को नसीहत करें बेशक आप नसीहत करने वाले हैं, इन पर दारोग़ा नहीं हैं।'' (सुरह ग़ाशिया, 21-22)

इस्लाम किसी इंसान के क़ौल व फेल और अक़ायद व अफकार की आज़ादी को नहीं छीनता। अगरचे इस्लाम ही के अक़ायद व अहकाम की पाबंदी में इंसानियत की कामयाबी व कामरानी का रहस्य समाया है और यही दीन बरहक़ है। अल्लाह तआला इरशाद फरमाता है -''दीन में (दाख़िल होने के लिए) कोई जोर जबरदस्ती नहीं, हिदायत गुमराही से स्पष्ट हो गई।

(सुरह बकरह-257)

लिहाज़ा दीन इस्लाम कबूल करने पर लोगों को मजबूर न करना अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) के दावती मंसूबे का पहला फार्मूला था और आप (सल्ल॰) की दावती सरगर्मियां बशरयत की हक़ व सदाक़त की तरफ रहनुमाई और अच्छे बुरे की तमीज़ पर आधारित थीं। इंसानों को सम्पूर्ण आजादी थी, कि वह अपने विवेक के अनुसार जो दीन चाहें कबूल करें। इसलिए आप (सल्ल॰) दावत दीन के संबंध से सिर्फ लोगों तक पहुंचा देने के मुकल्लिफ (उचित पात्र) थे। अल्लाह का इरशाद है-''अगर वह मुंह मोड़ लें तो आपकी जिम्मेदारी सिर्फ खुल्लम-खुल्ला पैग़ाम पहुंचा देना है।''

(सूरह नहल -82)

इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) लोगों के ज़ाहिरी अक़ायद व अफकार को उनके ईमान की दलील मानते थे और पोशीदा चीज़ों के पीछे नहीं पड़ते थे। इस्लाम किसी शख्स को इस बात की इजाज़त नहीं देता कि वह अपने दृष्टिकोण व राय को मनवाने के लिए दूसरों को मजबूर करे। यहां तक कि अंबिया के लिए भी जाइज़ नहीं कि वह अपनी बात ज़बरदस्ती कबूल करवाएं। अगरचे दीन के अहकाम ही का मसला हो। इसलिए अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने ज़बरदस्ती अपनी बात मनवाने के बारे में सोचा भी नहीं बल्कि अपनी शख़्सियत के बारे में हद से ज़्यादा तारीफ और गुलू करने से मना फरमाया -इरशाद नबवी है, ''ऐ मुसलमानों! तुम मेरे बारे में ऐसा गुलू। (हद से ज़्यादा तारीफ) न करो जिस तरह हज़रत ईसा अलै॰ के बारे में नसरानियों ने गुलु से काम लिया (अलहदीस) आप सल्ल॰ ने हुकूक़ इंसानियत और अख़्वत व भाईचारा का पाठ आम करके खरे-खोटे में तमीज़ करके और रहमत व शफफ़्कत से पेश आते हुए लोगों को जहालत व गुमराही से आजादी दिलायी। आप (सल्ल॰) ने अपनी बात मनवाने के लिए किसी पर ज़र्रा बराबर जब्र (जोर-ज़बरदस्ती) नहीं किया क्योंकि आप (सल्ल॰) इंसानियत को आजाद कराने के लिए निर्धारित हुए थे। इन पर जोर ज़बरदस्ती अपने अहकाम लागू करके ज़हनी व फिक्री गुलाम बनाने नहीं आए थे।

आज जब हम वर्तमान दौर का जायज़ा लेते हैं तो इस्लाम और दौरे हाज़िर के आज़ादी के दृष्टिकोण में ज़मीन व आसमान का अंतर नज़र आता है। आज सुपर पॉवर देश आजादी के नाम पर कमज़ोर देशों पर अपनी ताक़त व सल्तनत और सभ्यता-संस्कृति को ज़बरदस्ती थोप रहे हैं और इन देशों की व्यवस्था और कानूनों के मालिक बने हुए हैं। आज इंसानियत कुछ शरारती तत्वों के जुल्म व बर्बरता के शिकंजे में जकड़ी हुई है। यह देश अपने आपको इंसानियत का हमदर्द और उसको आजादी दिलाने वाला हीरो बना कर पेश करते हैं। इसलिए इस उद्देश्य की प्राप्ति की ख़ातिर दूसरे देशों पर शक्ति द्वारा कब्ज़ा करके इस पर फिक्री और फौजी सरकार थोपते हैं।

आज भूमंडलीकरण के नाम पर अमेरिका और उसके पिट्ठू देश इस कोशिश में है कि पूरी दुनिया में एक ही संस्कृति कल्चर एक ही जुबान और तमाम इंसानियत का एक ही तरीक़ा ज़िन्दगी लागू किया जाए। अगर दूसरे देश तरग़ीब के ज़रिए न मानें तो फौजी शक्ति और बम व मिज़ाइल के ज़रिए इन पर कब्ज़ा जमाया जाए। इन पर कब्ज़ा जमाया जाए और फिर उन्हें इस उद्देश्य के तहत इस्तेमाल किया जाए।

इराक़, अफग़ानिस्तान आदि दूसरे देशों में जो कुछ हो हुआ है हम उसे किस नाम से जोड़े आज देशों पर कब्ज़ा किया जा रहा है। निर्दोष नागरिकों का खून पानी की तरह बहाया जा रहा है इनके घरों को ध्वस्त किया जा रहा है। मांओं और बच्चों के बीच दूरी पैदा की जा रही है। और इस पर यह ऐलान कि अमेरिका और नाटो सेना उन्हें आज़ादी दिलाने आई है और वह सब काम आजादी दिलाने के लिए है।

इन्हें कौन बताए कि आज़ादी जंग के माध्यम से नहीं दिलायी जा सकती। आजादी खून की नदियां बहाने से नहीं प्राप्त होगी। आजादी मासूम और बेगुनाहों को मौत के घाट उतारने से क़ायम नहीं हो सकती और न ही आज़ादी किसी क़ौम पर अपना वर्चस्व स्थापित करके और उन्हें ज़हनी व फिक्री गुलाम बना कर दिलायी जा सकती है।

इंसानियत उस आजादी की हाजतमंद है जिसके क़ायद आखिरी रसूल जनाब मौहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम थे। इस तरह की हुर्रियत की ज़रूरत है जिस तरह आप (सल्ल॰) ने इस्लाम क़बूल करने के लिए किसी पर जब्र नहीं किया और न ही लोगों की फिक्री आजादी के बीच बाधा बने। और जहां तक जेहाद की बात है तो आपने जेहाद के ज़रिए सरकशों और गासिबों से लड़ाई करके इंसानियत को इनके हुकूक़ दिलवाए और इनके ख़िलाफ़ जुल्म व सितम को रोका। आज जेहाद के नाम पर खूब शोर मचाया जाता है और इसे इंसानियत के ख़िलाफ़ कहा जाता है, मगर इन शोर मचाने वालो को कौन बताए कि खुदा के आखिरी नबी हज़रत मौहम्मद (सल्ल॰) ने तलवार उसी वक्त उठायीं जब इंसानियत को गुलाम और मज़लूम बना दिया गया था। आज बड़ी ताक़तें ख़ासतौर पर सहयूनि ताक़तें जो कुछ कर रहा है इसका उद्देश्य मज़लूम इंसानियत को बचाना नहीं बल्कि उसे अपने पंजे की गिरफ्त का शिकार बनाना है जबकि इस्लाम ने मज़लूम इंसानियत को बचाने के लिए अपने जियालो का खून पेश करके यह साबित कर दिया था कि उसके नज़दीक इंसानों की आजादी और उनके लिए इंसाफ़ से बढ़कर कोई और चीज़ नहीं है। इसलिए आज इस बात की अति आवश्यकता है कि इस्लामी देश एकजुट हों और आपसी मश्वरे से राजनीतिक क़दम बढ़ाऐं और अपने मुख़ालिफों के हर-हर कदम को परखें इसी में इस्लामी देशों का अस्तित्व-सम्मान और आज़ादी संभव है जिसे आज मुख़ालिफ हड़प करने पर उतारू है।

आज जब हम वर्तमान दौर का जायज़ा लेते हैं तो इस्लाम और दौरे हाज़िर के आज़ादी के दृष्टिकोण में ज़मीन व आसमान का अंतर नज़र आता है। आज सुपर पॉवर देश आजादी के नाम पर कमज़ोर देशों पर अपनी ताक़त व सल्तनत और सभ्यता-संस्कृति को ज़बरदस्ती थोप रहे हैं और इन देशों की व्यवस्था और कानूनों के मालिक बने हुए हैं। आज इंसानियत कुछ शरारती तत्वों के जुल्म व बर्बरता के शिकंजे में जकड़ी हुई है। यह देश अपने आपको इंसानियत का हमदर्द और उसको आजादी दिलाने वाला हीरो बना कर पेश करते हैं। इसलिए इस उद्देश्य की प्राप्ति की ख़ातिर दूसरे देशों पर शक्ति द्वारा कब्ज़ा करके इस पर फिक्री और फौजी सरकार थोपते हैं।

75वां यौमे आज़ादी

आज़ादी के बाद भी...

हम तो आज़ाद हुए लड़कर पर
आज़ादी के बाद भी लड़ रहे हैं
पहले अंग्रेज़ों से लड़े थे,
अब अपनों से लड़ रहे हैं,
आज़ादी से पहले कितने
ख़्वाब आंखों में संजो रखे थे
अब आज़ादी के बाद भी वो
ख़्वाब, ख़्वाब ही रह गए है
अब तो अंग्रेज़ी राज और
इस राज में फर्क न लगे
पहले की वह बद स्थिति,
अब बदतर हो गई है.....

आज़ादी के बाद..

यह उन दिनों की बात थी,
चुनौतियों से भरी हर रात थी,
जब वीर जवानों ने हमारे
यह संदेश भिजवाया था,
शहीद होकर अमर हो गए
और देश आज़ाद करवाया था
हां, यह देश गुलज़ार है,
हवा में इसके प्यार है,
छोटे बड़े सब अपने है,
खुली आंखों में भी सपने हैं,
हर परिंदा अब आज़ाद है
सभी भाषाओं का अनुवाद है,
हर बूंद में प्यास है,
हर रस में मिठास है,
रंगमंच है खुशियों का,
और भविष्य का भी अंजाम है
ज़्यादा या थोड़ा ही सही पर
हर दिल में मौजूद कलाम है

वीर तुम बढ़े चलो

वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
हाथ में ध्वजा रहे बाल दल सजा रहे,
ध्वज कभी झुके नहीं दल कभी रुके नहीं,
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
सामने पहाड़ हो सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर डरो नहीं तुम निडर डटो वही,
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
प्रात हो कि रात हो संग हो न साथ हो,
सूर्य से बढ़े चलो चन्द्र से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
एक ध्वज लिये हुए एक प्रण किये हुए,
मातृभूमि के लिये पितृ भूमि के लिये
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,
अन्न भूमि में भरा वारि भूमि में भरा
यत्न कर निकाल जो रत्नभर निकाल लो,
वीर तुम बढ़े चलो, धीर तुम बढ़े चलो,

-द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी

सुंदर भारत देश

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई
हर धर्म के लोग अनेक...
मानवता ही धर्म हमारा..
जिस से बने हुए हम सब एक..
काले गोरे में भेद नहीं..
हम सब में मतभेद नहीं..
बना हुआ है हम सब में भाईचारा
जग में सुंदर भारत देश हमारा...
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई,
हमवतन, हमनाम है,
जो करे इनको जुदा, मज़हब नहीं
इल्ज़ाम है,
जग में सुंदर भारत देश हमारा है

माहे मोहर्रम की फ़ज़ीलत

पिछले अंक का शेष.....

सैयदना हज़रत इमाम हुसैन का मर्तबा बड़ा बुलंद है सूरह अहज़ाब के चौथे रुकू में है कि ऐ पैग़म्बर के घर वालों अल्लाह और कुछ नहीं यह चाहता है कि तुम से (हर तरह की) गंदगी दूर कर दे और तुको ख़ूब सुथरा (पाक साफ) बना दे। एक हदीस सहीह बुख़ारी शरीफ और मुस्लिम के मुताबिक एक रोज़ शाम के समय रसूले खुदा (सल्ल॰) हज़रत फातिमा रज़ि॰ के घर तशरीफ लाये और पूछा यहां बचवा है यहां बचवा है? आप इमाम को बचवा कहकर तलाश कर रहे थे थोड़ी देर में इमाम हुसैन दौड़े हुए आए आपने उन्हें गले से लगा लिया और फरमाया इलाही मैं इस बच्चे को दोस्त रखता हूं तू भी इसको दोस्त रख और जो उसको दोस्त रखे तू उसको भी दोस्त रख। सही बुख़ारी के मुताबिक़ हज़रत उस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि आहज़रत (सल्ल॰) के हमशक्ल हज़रत हसन रज़ियल्लाहो अन्हो से ज़्यादा और कोई नहीं था और हुसैन आलीमक़ाम की शान में फरमाते हैं कि ये रसूलुल्लाह (सल्ल॰) से बहुत मोशाबा थे आंहज़रत (सल्ल॰) से जब लोगों ने पूछा कि अहलेबैत में सबसे ज़्यादा कौन शख़्स आपको प्यारा है फरमाया हसन और हुसैन।

हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद (रज़ि॰) ने कहा कि सरकारे दो आलम (सल्ल॰) ने फरमाया कि मेरे अहलेबैत की मोहब्बत मरते वक़्त कब्र में जाते वक़्त मीज़ान के वक़्त और पुलसरात के वक़्त जो सबे सब बेहद ख़ौफनाक वक़्त हैं बहुत नफाबख़्श साबित होगी इसी तरह से हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि॰ ने कहा कि सरकारे दो आलम (सल्ल॰) ने फरमाया कि खुदा तआला से मुहब्बत करे क्योंकि उसने तुम्हें नेमअतें अता फरमायी हैं और खुदा की मोहब्बत की बिना पर मुझसे मुहब्बत करो और मेरी मुहब्बत की वजह से मेरे अहलेबैत से मोहब्बत करो।

अहलेबैत की मोहब्बत के सबब मग़फिरत का वादा है लिहाज़ा हज़रत अबूबकर सिद्दीक़ रज़ि. ने कहा है कि सरकारे दो आलम (सल्ल॰) ने फरमाया कि जो शख़्स मेरे अहलेबैत की हिफाज़त करेगा उसके लिए मैंने खुदा से मग़फिरत का अहद ले लिया है कि जो मेरे अहलेबैत की हिफाज़त करेगा उसको ज़रूर बख़्शा जाए। याद रहे कि नमाज़ में जब तक सरकारे दो आलम (सल्ल॰) और अहलेबैत पर दरूद न भेजा जाए नमाज़ नहीं होती। खुदा तआला ने कलाम-ए-पाक से अहलेबैत से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) और अहलेबैत की मोहब्बत ही शिफाअत है क़यामत के रोज़ जब हर ओर नफ़्सा नफ़्सी होगी तो यही मोहब्बत ही काम आएगी।

जहां तक ताज़ियादारी वगैरह की बातें हैं तो क़ुरआन और हदीस में इसका कोई सबूत नहीं है तवारीख़ के मुताबिक 352 हिजरी में माजुददौला नाम के एक शिया शख़्स ने ताजियादारी का रिवाज़ दिया और हिन्दुस्तान में 800 हिजरी में अमीर तैमूरलंग ने ईजाद किया उसने हज़रत इमाम हुसैन के रोज़ा की नक़ल मंगाकर उसे ताज़िया की सूरत में तैयार किया।

हदीस शरीफ में मुहर्रम के माह में विशेषकर आशूरा यानि मुहर्रम के दसवीं दिन के रोज़े की फज़ीलत है सहीह बुख़ारी में हज़रत अब्दुल्ला बिन अब्बास रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल॰) को कसदन करके किसी ख़ास दिन का रोज़ा यह समझकर कि वह दूसरे दिनों से अफज़ल है रखते नहीं देखा मगर उस दिन का यानि आशूरा के दिन का और उस महीने यानि रमज़ान का। सहीह मुस्लिम। हज़रत हुरैरा रज़ि. से रिवायत है कि रमज़ान के अलावा सब रोज़ों से अफज़ल रोज़ा अल्लाह के नज़दीक मुहर्रम का रोज़ा है और एक रिवायत में है कि आशूरा का रोज़ा रखने से एक वर्ष के गुनाह माफ हो जाते हैं और एक रिवायत में है कि आशूरा के साथ एक दिन पहले या पीछे का रोज़ा भी रखना चाहिए सहीह मुस्लिम हदीस में है कि सैयदे आलम नबी करीम (सल्ल॰) ने फरमाया कि अगर मैं आईन्दा साल ज़िन्दा रहा तो नवीं मुहर्रम को भी रोज़ा रखूंगा।

सहीह बुख़ारी में हज़रत आएशा रज़ि. से रिवायत है कि आंहज़रत (सल्ल॰) ने आशूरा के दिन रोज़ा रखने का हुक्म दिया जब रमज़ान के रोज़े फर्ज़ हुए तो आप (सल्ल॰) ने फरमाया कि जो चाहे आशूरा का रोज़ा रखे और जो चाहे न रखे। मालूम हुआ कि आशूरा का रोज़ा वाजिब नहीं है सुन्नत है मगर सवाब का ख़्याल करके रोज़ा रखना बेहतर है।

नमाज़ क़ुरआन हदीस के अलावा जो कुछ भी ग़ैर ज़रूरी काम मुहर्रम में किये जाते हैं वह सब जाहिलियत की निशानी है। दीन के काम में नई बातें निकाल देना बिदअत है सहीह बुख़ारी और मुस्लिम में हज़रत आएशा रज़ि॰ से रिवायत है कि जो कोई इस्लाम में नई बात निकाले वह मरदूर है और एक रिवायत में है कि तमाम कामों में बुरा काम वह है जो दीन में नया काम निकाला जाये और हर नया काम बिदअत है और बिदअत गुमराही है।

जहां तक ताज़ियादारी वगैरह की बातें हैं तो क़ुरआन और हदीस में इसका कोई सबूत नहीं है तवारीख़ के मुताबिक 352 हिजरी में माजुददौला नाम के एक शिया शख़्स ने ताजियादारी का रिवाज़ दिया और हिन्दुस्तान में 800 हिजरी में अमीर तैमूरलंग ने ईजाद किया उसने हज़रत इमाम हुसैन के रोज़ा की नक़ल मंगाकर उसे ताज़िया की सूरत में तैयार किया ताकि बादशाह और हिंदुस्तान के दूसरे लोग इसकी ज़ियारत कर लें लेकिन आज हम देखते हैं कि माहे मुहर्रम में ताज़ियादारी, ढोल, ताशे पीटना, अखाड़े खेलना जैसी अनेक बुराईयों बिदअतों ने अपनी जड़ें जमा लीं है। मुसलमानों भाईयों आप क़ुरआन हदीस के मानने समझने वाले हैं और आपका मज़हब इस्लाम है जो बुराईयां बिदअत नासमझियों ग़लतियों को दूर करने वाला है। आप ऐसी बुराईयों को न सिर्फ छोड़ दें बल्कि जो लोग ग़फ़लत में हैं और अपनी अज्ञानता के कारण ऐसी बुराईयों में लिप्त हैं उन्हें भी समझाएं और बुराईयों बिदअतों का डटकर मुक़ाबला करके उन्हें ख़त्म करने में सहयोग करे। पिछले वर्ष 2020 से कोरोना महामारी के कारण सरकार ने प्रत्येक त्यौहार को मनाने के लिए कुछ गाइड लाईन्स जारी कर रखी है, हमें भी सरकार की इन गाइड लाईंस को पूरा करते हुए अपने त्यौहार सादगी के साथ मनाने चाहिए ताकि देश और दुनिया में ये संदेश जाए कि इस्लाम पूरी दुनिया के लिए अम्न का संदेश देता है। ❑❑

सुनहरे अक़वाल

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से किसी ने पूछा ''इल्म क्या है?'' आपने फरमाया इल्म यह है कि :-

- अगर कोई तुम पर जुल्म करे तो उसे माफ़ कर दो।
- अगर तुम्हारे साथ कोई तआल्लुक़ात तोड़ दे तो तुम जोड़ दो।
- कोई तुम्हें महरूम कर दे तो तुम उसे नवाज़ दो।
- ताक़ते इंतक़ाम हो तो अफ्वोदरगुज़र से काम लो।

नूरे क़ुरआन

(सूरा अल्लैल नं॰ 92)

अनुवाद और व्याख्या : शैख़ुल हिन्द र.अ.

रुकू नं॰ 1

और अपने उच्चतम पद वाले पालनहार की प्रसन्नता प्राप्त करने के अतिरिक्त उस पर किसी का अहसान नहीं था जिसका बदला उतारना हो और शीघ्र ही वह व्यक्ति प्रसन्न हो जायेगा।

अर्थात् ख़र्च करने से किसी मनुष्य के अहसान का बदला उतारना उद्देश्य नहीं, बल्कि विशुद्ध अल्लाह की प्रसन्नता प्राप्त करने और अल्लाह के दर्शन की इच्छा में घर-बार लुटा रहा है, तो वह संतोष रखे कि उसको अवश्य खुश कर दिया जायेगा और उसकी यह इच्छा अवश्य पूर्ण होकर रहेगी।

चेतावनी : यद्यपि आयत का विषय सामान्य है, परंतु अधिकतर हदीसें साक्षी हैं कि इन अन्तिम आयतों का अवतरण हज़रत अबू बकर सिद्दीक के सम्बन्ध में हुआ और यह बहुत बड़ा प्रमाण उनके सम्मान और बड़ाई का है। सौभाग्य उस व्यक्ति का जिसके उम्मत मे से सबसे अधिक नेक और परहेज़गार होने का प्रमाण आसमान से हो और अल्लाह की ओर से नेक होने की शुभसूचना सुनाई जाये। वास्तव में हज़रत अबू बकर सिद्दीक के लिए प्रसन्न होने की यह शुभसूचना लगभग ऐसी ही है, जैसी अगली सूरा में अल्लाह के रसूल के लिए शुभ सूचना आ रही है।

(सूरा वज्जुहा नं॰ 93)

यह सूरा मक्का में उतरी इसमें 11 आयतें हैं।

प्रारंभ करता हूं मैं अल्लाह के नाम से जो असीम कृपालु महादयालु है।

कसम है धूप चढ़ते समय की और रात की जब वह छा जाये कि आपके पालनहार ने आपको छोड़ा और न आप से दुश्मनी की।

हदीसों में है कि जिब्रील अलै॰ देर तक मुहम्मद सल्ल॰ के पास न आये (अर्थात् क़ुरआन का वह्यी बन्द रही) मुशरीकीन (अल्लाह का साझी बनाने वाले) कहने लगे कि मुहम्मद को उसके रब ने छोड़ दिया।

रसूलुल्लाह सल्ल॰ की अपने नवासों से बेइंतेहा मुहब्बत

हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''हसन और हुसैन जन्नती नौजवानों के सरदार हैं।'' (तिर्मिज़ी)

हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो रिवायत करते हैं कि एक रात मैं किसी काम से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप इस तरह बाहर तशरीफ लाए कि आप किसी चीज को उठाए हुए हैं, मैंने दरख़्वास्त किया कि आप किस चीज़ को उठाए हुए हैं तो आप ने चादर उठाई तो मैंने देखा कि आप के दोनों पहलुओं में हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ियल्लाहो तआला अन्हुमा हैं। आप ने फरमाया ये दोनों मेरे बेटे और मेरे नवासे हैं तू इन से मोहब्बत फरमा और जो इन से मुहब्बत करे उन से मुहब्बत कर। (तिर्मिजी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा गया कि एहले बैत में आप को कौन सबसे ज़्यादा प्यारा है तो आप ने फरमाया हसन और हुसैन और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फातिमा से फरमाते थे मेरे पास मेरे बच्चों को बुलाओ फिर उन्हें सूंघते थे और फिर उन्हें अपने कलेजे से लगाते थे।

कर्बला में यौमे आशूरह पर इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम और उन के घराने के नौजवान और साथियों की शहादत हुई इस से सब को ग़म है और सब ही मानते हैं कि यज़ीद की फौज ने इमाम के साथ जो बेअदबी, गुस्ताख़ी और जुल्म किया वह किसी भी तरह से रवा नहीं था। अहले बैत की ततहीर की आयात से यह साबित हो गया कि इमाम हुसैन का कोई भी क़दम रज़ाए इलाही से हटकर नहीं था, इसलिए हम इमाम हुसैन के बारे में अगर ज़रा सी भी बेअदबी, गुस्ताख़ी करेंगे तो अल्लाह और उसके रसूल के दरूबार में मुआख़ज़ादार होंगे यज़ीद ने जो कुछ किया और कराया उसका वह भी यकीनन मुआखजादार होगा।

आज ज़रूरत है कि हम हज़रत हसन और हुसैन अलैहिमुस्सलाम की पाकीज़ह ज़िन्दगी का मुतालआ करें और उनके नक़्शे क़दम पर चलकर अपनी ज़िन्दगियों को कामयाब बनाएं।

उ०प्र० – सुधारनी होगी पंचायती चुनाव प्रक्रिया

उत्तर प्रदेश के उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने हाल में कहा कि राज्य में अगली बार ज़िला पंचायत अध्यक्ष और ब्लॉक प्रमुख के चुनाव सीधे जनता द्वारा कराए जाएंगे। इस पर बाकी राज्यों को भी विचार करना चाहिए। उल्लेखनीय है कि अभी जनता द्वारा चुने गए ज़िला पंचायत सदस्य और क्षेत्र पंचायत सदस्य क्रमश: ज़िला पंचायत अध्यक्ष और ब्लॉक प्रमुख का चुनाव करते हैं। इन चुनावों में ध नबल और बाहुबल का अत्याधिक दुरुपयोग होता है। इनमें सत्तारूढ़ दल के पक्ष में शासन-प्रशासन की मशीनरी का भी बेजां इस्तेमाल होता है। इसलिए इन चुनावों के परिणाम वास्तविक जनादेश की अभिव्यक्ति नहीं करते। उ.प्र. ही नहीं, बल्कि बंगाल, राजस्थान, बिहार, पंजाब, हरियाणा, ओडिशा और जम्मू कश्मीर आदि राज्य जहां भी त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था लागू हैं, वहां कमोबेश यही कहानी है। सर्वविदित है कि सत्तारूढ़ दल ही नहीं इनमें से अधिकांश पदों पर जीत हासिल करते हैं। वर्ष 2015-16 में उ.प्र. में तत्कालीन सत्तारूढ़ दल सपा ने जिला पंचायत अध्यक्ष की 75 सीटों में से कुल 63 सीटें और ब्लॉक प्रमुख की 826 सीटों में से 623 सीटें जीतकर नया कीर्तिमान बनाया था। 2010 के चुनावों में सत्तारुढ़ बसपा ने लगभग यही किया था। 2021 के हालिया संपन्न चुनावों में सत्तारुढ़ भाजपा ने जिला पंचायत अध्यक्ष की 67 सीटें और ब्लॉक प्रमुख की 648 सीटें जीतकर नया इतिहास रच दिया है। पंचायत चुनावों में इतनी शानदार जीत हासिल करने के बावजूद साल-डेढ़ साल के बाद हुए विध ानसभा चुनावों में सत्तारुढ़ दलों का हश्र बहुत बुरा हुआ। इस आधार पर यह निष्कर्ष निकालना मुश्किल नहीं है कि ये चुनाव वास्तविक जनादेश की अभिव्यक्ति नहीं करते।

देश में 24 अप्रैल, 1993 को 73वें संविधान संशोधन के परिणाम स्वरूप त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था को लागू करने की सबसे बड़ी वजह गांधी जी की ग्रामस्वराज की अवधारणा थी। गांधी जी की लोकतंत्र की अवरधारणा में शासन प्रशासन का विकेन्द्रीकरण अंतनिर्हित है। उनके इसी सपने को साकार करने के लिए और लोकतंत्र और विकास को ऊपर से नीचे की जगह नीचे से ऊपर की ओर संभव करने के लिए पंचायती राज व्यवस्था लागू की गई। इसमें ग्राम पंचायत, और ज़िला पंचायत को शामिल किया गया। ग्राम पंचायत के अध्यक्ष अर्थात् प्रधान या सरपंच का चुनाव तो ग्राम पंचायत के मतदाता प्रत्यक्ष मतदान के द्वारा करते हैं, किन्तु क्षेत्र पंचायत अध्यक्ष अर्थात् ब्लॉक प्रमुख और ज़िला पंचायत अध्यक्ष जिला पंचायत प्रमुख का चुनाव जनता द्वारा चुने हुए सदस्य करते हैं। इस अप्रत्यक्ष चुनाव के कारण ही पंचायती राज व्यवस्था के दूसरे और तीसरे पायदान इतने दूषित और तमाम बुराईयों के उद्गम स्थल बन गए हैं।

ब्लॉक प्रमुख और ज़िला पंचायत अध्यक्ष का कोई प्रत्यक्ष निर्वाचक मंडल न होने से इनकी उसके प्रति जवाबदेही नगणय होती है। इसलिए ये विकास कार्यों के लिए आवंटित राशि का कहां, कितना और कैसा प्रयोग करते हैं, इसका ज़मीनी हिसाब किताब न होकर कागज़ी लेखा जोखा ही अधिक होता है।

क्षेत्र पंचायत सदस्यों और ज़िला पंचायत सदस्यों की क्रमश: ब्लॉक प्रमुख और ज़िला पंचायत अध्यक्ष चुनाव में मतदान के अलावा कोई सक्रिय और व्यावहारिक भूमिका नहीं होती है। उनके पास कोई कार्यकारी शक्ति, बजट आदि भी नहीं होते हैं। इसलिए वे प्रमुख और अध्यक्ष के चुनाव में प्राय: अपने मत को एकमुश्त रक़म लेकर बेच देते हैं। सदस्यों की खरीद फरोख़्त में करोड़ों रुपये लगाकर चुनाव जीते हुए प्रमुख और अध्यक्ष विकास की जगह अपने ख़र्च की भरपाई में जुट जाते हैं। इससे ये संस्थाएं भ्रष्टाचार के बड़े अड्डे बन जाती हैं। ब्लॉक प्रमुख और ज़िला पंचायत अध्यक्ष का कोई प्रत्यक्ष निर्वाचक मंडल न होने से इनकी उसके प्रति जवाबदेही नगणय होती है। इसलिए ये विकास कार्यों के लिए आवंटित राशि का कहां, कितना और कैसा प्रयोग करते हैं, इसका ज़मीनी हिसाब किताब न होकर कागज़ी लेखा जोखा ही अधिक होता है। इस प्रकार विकास राशि के बड़े हिस्से की बंदरबांट हो जाती है। इस व्यवस्था में आंशिक परिवर्तन करके क्षेत्र पंचायत सदस्यों और ज़िला पंचायत सदस्यों के ग़ैरज़रूरी और बेवजह ख़र्चीले चुनाव से बचा जा सकता है। ग्राम पंचायत पंचायती राज व्यवस्था की वास्तविक रीढ है। प्रधान/सरपंच का चुनाव जनता सीधे करती है। उसके पास कार्यकारी अधिकार, वित्तीय शक्तियां और संसाधन होते हैं। उसका अपने निर्वाचकों के साथ सीधा संपर्क और अपने प्रति प्रत्यक्ष जवाबदेही भी होती है। इसी तर्ज़ पर क्षेत्र पंचायत और ज़िला पंचायत सदस्यों के चुनाव की जगह जनता द्वारा सीधे ब्लॉक प्रमुख और ज़िला पंचायत अध्यक्ष का चुनाव कराया जाना चाहिए। ब्लॉक के सभी प्रधानों को क्षेत्र पंचायत का सदस्य बनकर और जिले के सभी ब्लॉक प्रमुखों को जिला पंचायत का सदस्य बनाकर पंचायत और ज़िला पंचायत का गठन किया जा सकता है।

इन चुनावों को राजनीतिक दलों के आधार पर नहीं लड़ा जाना चाहिए। वे इन चुनावों को अपनी प्रतिष्ठा से जोड़कर धनबल, बाहुबल और प्रशासनिक मशीनरी का दुरुपयोग करते हैं। इससे चुनावों की निष्पक्षता और पारदर्शिता बुरी तरह प्रभावित होती है। जब ये चुनाव भी ग्राम प्रधान की तरह गैर राजनीतिक आधार पर होंगे और राजनीतिक दलों के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप से मुक्त होंगे तो ज़मीनी स्तर पर जनता के बीच सक्रिय और लोकप्रिय नेताओं की नई पौध तैयार हो सकेगी।❑❑

अमीरों के पलायन पर एग्जिट टैक्स वसूल करे सरकार

भरत झुनझुनवाला

एफ्रो एशियन बैंक द्वारा 2018 में प्रकाशित 'ग्लोबल वैल माइग्रेशन रिव्यू' में बताया गया कि उस वर्ष चीन से 15000 अमीरों ने, रूस से 7000, तुर्की से 4000 और भारत से 5000 अमीरों ने पलायन किया। इन 04 में पहले 3 देश चीन, रूस एवं तुर्की में तानाशाही सरकार है जबकि भारत लोकतांत्रिक है। हम मान सकते हैं कि चीन आदि देशों से पलायन का कारण वहां की तानाशाही और घुटन हो सकता है लेकिन भारत का इस सूची में सम्मिलित होना ख़तरे की घंटी है, क्योंकि हमारे यहां लोकतंत्र है।

एफ्रो एशियन बैंक ने यह भी बताया है कि इन देशों से पलायन किए अमीरों में से 12000 ऑस्ट्रेलिया, 10000 अमेरिका, 4000 केनेडा और 100 से अधिक मॉरिशस को गए। इनमें आस्ट्रेलिया को पलायन चिंता का विषय है क्योंकि यदि मॉरिशस अमीरों को आकर्षित कर सकता है तो निश्चित रूप से भारत को आकर्षित कर सकता है तो निश्चित रूप से भारत के लिए भी उन्हें आकर्षित करना संभव होना चाहिए था लेकिन हमारी चाल उलटी है और तेज़ी होती जा रही है।

कोविड-19 के संकट से पलायन की यह गति और तीव्र हो गई है। हेनेली एंड पार्टनर्स कंपनी द्वारा अमीरों को एक से दूसरे देश में पलायन करने में मदद की जाती हैं इनके अनुसार वर्ष 2020 में भारत से पलायन करने वालों में 63 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। हमारे यहां से पलायन किए अमीर जिस दूसरे देश में जाकर बसे हैं, वहां भी कोविड का संकट था, इसलिए कोविड को पलायन में वृद्धि का कारण नहीं बताया जा सकता।

भारतीय विद्वानों द्वारा पलायन के तीन कारण बताए जा रहे हैं। पहला यह कि भारत में आयकर की दर अधिक हैं, नहीं टिकता क्योंकि आस्ट्रेलिया में भी आयकर की दरें ऊंची हैं। दूसरा, भारत में शिक्षा के अवसर उपलब्ध नहीं हैं, भी नहीं टिकता क्योंकि भारत की तुलना में मॉरिशस में शिक्षा के अवसर बहुत ही कम हैं। तीसरा, तकनीक और बैंकिंग क्षेत्रों में अवसर कम हैं, यह भी स्वीकार्य नहीं है क्योंकि इंफोसिस एवं टाटा कंसल्टैंसी जैसी तमाम कंपनियां भारत में काम कर रही हैं। निजी बैंकों में भी पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं।

भारत से पलायन का पहला सच्चा कारण सुरक्षा का है। लोग पुलिस को अकर्मण्य और अक्सर भ्रष्ट मानते हैं। अमीरों को अपने परिवार की सुरक्षा की विशेष चिंता होती है। वे नहीं चाहते कि किसी चौराहें पर उनके परिवार को अग्वा कर लिया जाए। दूसरा कारण धार्मिक उन्माद है। अमीर लोग धन कमाना चाहते हैं, उन्हें शांत और स्थिर वातावरण चाहिए होता है। अपने देश में धार्मिक उन्माद पहले से ही थे, वर्तमान में ये बढ़ ही रहे हैं। तीसरा कारण मीडिया और मनोरंजन की स्वतंत्रता का अभाव है। वर्तमान समय में सरकार द्वारा पूरा प्रयास किया जा रहा है कि आलोचना को दबाया जाए, आलोचकों को देशद्रोह के मामलों में उलझाया जा रहा है। सरकार द्वारा आलोचक मीडिया पर भी विभिन्न प्रकार से दबाव बनाया जा रहा है।

मेरी दृष्टि से इन 03 वजहों से भारत से अमीरों का भारी संख्या में पलायन हो रहा है और इस पलायन का परिणाम है कि देश की आर्थिक विकास दर 2014-2019 के पिछले 15 सालों से लगातार गिर रही थी, वर्तमान समय में कोविड के संकट में इनमें और तीव्र गिरावट आई है। भारत की अर्थव्यवस्था एक वैक्यूम क्लीनर द्वारा संचालित की जा रही है, जो देश की संपत्ति को खींच कर विदेशों को भेज रहा है। कोई आश्चर्य नहीं है कि कोविड के संकट में इसमें और तीव्र गिरावट आई है। कोई आश्चर्य नहीं है कि कोविड के संकट के कारण हम चीन से आगे निकलने के स्थान पर और पीछे होते जा रहे हैं।

इस परिस्थिति में सरकार को निम्न क़दमों पर विचार करना चाहिए - पहले सुरक्षा का वातावरण सुधारने के लिए शीर्ष पुलिस अधिकारियों का बाहरी मूल्यांकन कराना चाहिए। पांचवें वेतन आयोग ने सुझाव दिया था कि सभी क्लास-ए अधिकारियों का हर 05 वर्ष में बाहरी मूल्यांकन कराया जाए। इससे सरकार को पता चल जाएगा कि कौन अधिकारी देश के नागरिकों की सुरक्षा वास्तव में कर सकते हैं। इसके अलावा सरकार द्वारा एक अलग पुलिस भ्रष्टाचार जासूस तंत्र स्थापित किया जाना चाहिए जो पुलिस महकमे में व्याप्त भ्रष्टाचार को स्वसंज्ञान लेकर ट्रैप करे।

दूसरा विषय धार्मिक उन्माद का है। इस दिशा में सरकार को हर राज्य में 'इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' की तरह इंडियन इंस्टीच्यूट ऑफ रिलीजन' स्थापित करना चाहिए, जहां विभिन धर्मों के विभाग हों और एक ही छत के नीचे सभी धर्मों के बीच सौहार्दपूर्ण वार्तालाप हो। तब समाज में भी यह सौहार्द फैलेगा।

तीसरा विषय मीडिया का है। सरकार को आलोचकों को अपना विरोधी मानने के स्थान पर अपना सहयोगी मानना चाहिए। कोई नेता ब्रह्मज्ञानी नहीं होता। ग़लतियां हर किसी से होती हैं। यदि ग़लतियों की ओर शीघ्र ध्यानाकर्षण कर दिया जाए तो नेता अपने को शीघ्र सुधार लेता है और अधिक समय तक शीर्ष पर बना रहता है इसलिए सरकार को चाहिए कि वह आलोचक मीडिया को अपना विरोधी मानने की बजाय अपने सहयोगी के रूप में देखें और ऐसे मीडिया को विशेष तौर पर पुरस्कृत करे, जिसकी आलोचना से सरकार को अपने क़दम सुधारने में लाभ मिला है।

अन्त में एक और क़दम सरकार को उठाना चाहिए। जो शिक्षित एवं अमीर लोग देश छोड़कर पलायन करना चाहते हैं, उनसे भारत की नागरिकता छोड़ने के लिए विशेष टैक्स लगाकर भारी रक़म वसूल करनी चाहिए। मेरे संज्ञान में ऐसे व्यक्ति हैं, जिन्होंने किसी समय अमेरिका की नागरिकता ले ली थी और बाद में वे उसे छोड़ना चाहते थे। अमेरिकी सरकार ने नागरिकता छोड़ने के लिए उनसे भारी एग्जिट टैक्स वसूल किया। अमेरिकी सरकार का कहना था कि अमेरिकी नागरिक के रूप में उन्होंने जिन सुविधाओं का उपयोग किया है, उनका उन्हें भुगतान करना होगा। इसी प्रकार भारत से पलायन करने वाले शिक्षित और अमीरों पर एग्जिट टैक्स लगाना चाहिए।❑❑

आधी सदी बाद हॉकी में लौटी भारत की शान

भारतीय पुरुष हॉकी टीम के 49 वर्ष बाद ओलिंपिक सेमीफाइनल में जगह बनाने पर देशभर में खुशी का माहौल देखने को मिला। भारतीयों का हॉकी से भावनात्मक लगाव है, जो ओलिंपिक खेलों में 1928 से 1964 तक बादशाहत क़ायम रहने से पैदा हुआ। भारत की हॉकी टीम 1972 के म्यूनिख ओलिंपिक में आखिर बार सेमीफाइनल में पहुंची थी। इसके बाद 1980 के मॉस्को ओलिंपिक में उसने स्वर्ण पदक जीता था लेकिन तब फार्मेट ऐसा था कि सेमीफाइनल मैच नहीं हुए थे। इसके बाद दशकों तक भारतीय हॉकी में गिरावट का दौर चला। इस बीच, ओलिंपिक में कभी टीम आखिरी स्थान पर रही तो कभी इसके लिए क्वालीफाई तक नहीं कर पाई। इस बार सेमीफाइनल तक पहुंचना मानो पुराने मक़ाम तक पहुंचना जैसा है। तोक्यो में करिश्मा सिर्फ पुरुष हॉकी टीम ने ही नहीं किया है, महिला टीम ने भी आस्ट्रेलिया जैसी दिग्गज टीम को हराकर सेमीफाइनल में जगह बनाई ये बात अलग है कि कड़े संघर्ष के बाद वह अपने ऐतिहासिक मेडल से चूक गई। टीम को ब्रांज मेडल मैचल में ब्रिटेन के हाथों 4-3 से हार का सामना करना पड़ा। भारत को चौथे स्थान के साथ ही संतोष करना पड़ा। यह टीक का अब तक सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। टीम 1980 मॉस्कों ओलिंपिक में भी चौथे स्थान पर रही तो वो महिला हॉकी का पहला ओलंपिक था, लेकिन तब सिर्फ 6 टीमें खेली थी।

भारतीय हॉकी के स्तर में सुधार के लिए पिछले सालों के दौरान कई विदेशी कोच लाए गए, लेकिन उन्हें विशेष सफलता नहीं मिली। इस बार जो टीम सेमीफाइनल में खेली, वह भी एक विदेशी कोच ग्राहम रीड की देख रेख में तैयार हुई थी। इस कोच ने टीम में जो आत्मविश्वास भरा है, उसकी जितनी तारीफ की जाए कम है। विशेषकर भारत ने आस्ट्रेलिया के साथ दूसरा मैच जिस तरह से गंवाने के बाद टूर्नामेंट में वापसी की, वह कोई मज़बूत मनोबल वाली टीम ही कर सकती थी। भारतीय हॉकी टीम ने पहले मैच में न्यूजीलैंड को हराकर तोक्यो ओलंपिक में शानदार शुरुआत की थी। ब्रिटेन के ख़िलाफ़ क्वार्टर फाइनल में भारत ने मैच के तीसरे और चौथे क्वार्टर में विपक्षी टीम द्वारा बचाव किया और फिर आख़िरी मिनट में गोल जमाकर बढ़त को मज़बूत कर लिया। इससे पता चलता है कि टीम के इरादे कितने मज़बूत हैं। आमतौर पर हमारे डिफेंडर बचाव में लड़खड़ा जाते थे, जिसका फायदा उठाकर सामने वाली टीमें हार को जीत में बदल लिया करती थीं। मौजूदा टीम को देखकर लगता है कि अब उनके लिए ऐसा करना मुश्किल होगा।

इस टीम में एक और ख़ूबी देखने को मिली। पहले हम बढ़त बनाने के बाद डिफेंसिव हो जाया करते थे, लेकिन ग्राहम रीड की इस टीम ने बढ़त बनाने के बाद अच्छा बचाव करने के साथ हमले भी जारी रखे। टीम में यह बदलाव खिलाड़ियों की अच्छी फिटनेस की वजह से आया है। पहले भारतीय टीम ख़राब फिटनेस के कारण भी दिक्क़तें झेलती थी। अब हमारे खिलाड़ी इस मामले में किसी भी टीम से कम नहीं है। उनमें पूरे 60 मिनट एक ही गति से खेलने की क्षमता है। इसमें बड़े पैमाने पर होने वाली सस्ट्टियूटशन और खेल के 15-15 मिनट के चार क्वॉटरों ने भी अहम भूमिका निभाई है।

ओलिंपिक हॉकी के मौजूदा फार्मेट में एक मैच किसी टीम की तक़दीर बदल सकता है। भारतीय टीम ने ब्राजील रियो में हुए पिछले ओलिंपिक में भी अच्छा खेल दिखाया था, लेकिन तब

बाक़ी पेज 11 पर

भारत को एकमात्र गोल्ड दिलाने वाले नीरज चोपड़ा की निगाहें अब विश्व चैंपियनशिप के ख़िताब पर

राष्ट्रमंडल खेल और एशियाई खेला 2018 में ख़िताब जितने के बाद ओलंपिक में स्वर्ण पदक जीतकर इतिहास रचने वाले भाला फेंक के स्टार एथलीट नीरज चोपड़ा का लक्ष्य अब अगले वर्ष अमेरिका में होने वाली विश्व एथलेक्टिस चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतना है। नीरज चोपड़ा ने टोक्यो ओलंपिक में भाला फेंक में स्वर्ण पदक जीतकर भारतीय खेलों में नया इतिहास रचा है। नीरज ने अपने दूसरे प्रयास में 87.58 मीटर भाला फेंका जो कि सोने का तमगा हासिल करने के लिए पर्याप्त था। यह ओलंपिक एथलेटिक्स में भारत का एकमात्र स्वर्ण पदक है। नीरज के कोच नसीम ख़ान भी उनकी इस अभूतपूर्व सफलता पर बहुत प्रसन्न है, उन्होंने कहा ''यह मात्र नीरज या मेरे लिए बल्कि पूरे देश के लिए मेडल है और पूरा देश इससे गौरन्वित महसूस कर रहा है।''

हर चार साल में एक बार आयोजित होने वाले दुनिया के सबसे भव्य खेल आयोजन में एक स्वर्ण जीतना अपने आप में इतना असंभव है कि टोक्यो में प्रतिस्पर्धा करने वाले 11.707 एथलीटों में से 3 प्रतिशत से भी कम ऐसे कर पाते हैं। नीरज की उपलब्धि और भी यादगार है। इस उपलब्धि के बाद नीरज पर उपहारों की बारिश हो रही है। हरियाणा सरकार ने नीरज को 6 करोड़ रुपए देने का ऐलान किया और क्लास-ए की नौकरी की पेशकश की। पंजाब सरकार ने भी 2 करोड़ रुपए देगी इसके अलावा कई निजी संस्थानों ने भी ईनामों की घोषणा की है। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) और इंडियन प्रीमियर लीग फ्रेंचाइजी चेन्नई सुपर किंग्स ने भी चोपड़ा को एक-एक करोड़ रुपये का पुरस्कार देने की घोषणा की है। ❑❑

बेहतर स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी है पूरी नींद लें

''आराम बड़ी चीज़ है, मुंह ढंक कर सोइए!'' हमने यह कहावत सुनी है, मगर क्याआपको पता है कि आपको कितनी नींद की ज़रूरत है। खाने की तरह नींद भी बहुत ज़रूरी है। जिस तरह कम खाना या पौष्टिक भोजन न लेना सेहत पर गलत प्रभाव डालता है, उसी प्रकार कम सोने का भी शरीर पर बुरा असर पड़ता है। नींद की ज़रूरत हर शरीर, हर आयु में होती है। आयु के अनुसार नींद की अलग अलग आयु वर्ग के लोगों के लिए अलग अलग समय की भी हो सकती है। नेशनल स्लीप फाउंडेशन के अनुसार, नींद का आयु और स्वास्थ्य से गहरा संबंध है। इसके लिए यह समझना बेहद ज़रूरी है कि आपको कितनी नींद की ज़रूरत है। इसे समझने के लिए पहले यह जानना ज़रूरी है कि आपकी दिनचर्या क्या है, स्वास्थ्य कैसा है?

विशेषज्ञों का मानना है कि नींद की सही मात्रा हमारे स्वस्थ शरीर के लिए बेहद ज़रूरी है। अगर आपका बच्चा चिड़चिड़ा या गुस्सैल हो रहा है तो ज़रूरी जानना है कि क्या उसे अच्छी नींद मिल रही है या नहीं। अगर बच्चा वीकेंड में ज़्यादा सोता है तो इसका मतलब यह है कि उसकी नींद पूरी नहीं हो रही है। ऐसा सिर्फ बच्चे ही नहीं, अधिक आयु वालों के साथ भी होता हैं अच्छी सेहत के लिए ज़रूरी है कि समय पर सोया जाए और समय पर उठा जाए।

नींद से आपकी पूरी सेहत जुड़ है। अगर नींद पूरी नहीं होगी तो सही तरीके से कोई काम नहीं हो पाएगा। नींद पूरी होने से मोटापा, फैटी लीवर, मधुमेह का ख़तरा कम होता है। किशोरों में तनाव कम होता है और वे पढ़ाई पर ज़्यादा ध्यान दे पाते हैं। नींद के समय ग़ैरज़रूरी बातें दिमाग़ से बाहर निकल जाती हैं और रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है लेकिन हर किसी का काम और दिनचर्या अलग होती है। इसलिए अपनी दिनचर्या के अनुसार नींद की ज़रूरत को समझें। अगर आयु के अनुसार आपको नींद की ज़रूरत पूरी नहीं होती है तो अपने सोने के समय और काम को समझें। उसके अनुसार अपनी नींद का समय निर्धारित करें। इसके लिए पूरी योजनाए बनाएं, ताकि आपको साउंड स्लीप यानि बेहद नींद मिल सके। स्लीप हाइजीन के लिए आपको बैड रूम की सेटिंग के साथ जीवन-शैली में भी कुछ बदलाव करने होंगे। जैसे कि:

सोने के एक घंटा पहले फोन, टीवी बंद करें। बेडरूम या तकिए के पास फोन न रखें। अच्छे गद्दे तकिए, साफ बिस्तर पर साएं। बेडरूम में हल्का वातावरण बनाएं और अच्छी खूश्बू वाली कैंडल जला कर माहौल खुशनूमां बनाएं। कॉफी और चार के सेवन पर नियंत्रण रखें और सोने से पहले पीने से बचें। गुनगने पानी में नीमा की पत्ती डालकर नहाएं। पैर के तलवों की घी से मालिश करें।

हम हम सोते हैं तो उस दौरान कार्डियोवैस्कुलर बेहतर करता है और मेटाबॉलिज़्म को बढ़ाता है। अच्छी सेहत के लिए ज़रूरी है कि अपनी ज़िम्मेदारी, अपने काम को समझें और उसी के अनुसार नींद भी लें। अच्छी नींद के लिए जीवन शैली में बदलाव करना भी ज़रूरी है। साथ ही सोने से तीन से चार घंटे पहले खाना खाएं ताकि अच्छी नींद आए और सुबह तरोताज़ा महसूस करें।

किसको कितनी नींद की आवश्यकता

0-3 महीने के नवजात को 14-17 घंटे। 4-11 महीने के बच्चे को 12-15 घंटे। 1-2 साल के बच्चे को 11 से 14 घंटे। 3-5 साल तक के बच्चे के लिए 11 से 13 घंटे। 6 से 13 वर्ष के बच्चे लिए 9 से 11 घंटे की नींद। 15-17 तक के किशोरों के लिए 8 से 10 घंटे की नींद। 18 से 25 वर्ष के युवा वर्ग के लिए 7 से 9 घंटे की नींद। 26-65 वर्ष के व्यक्ति के लिए 7 से 9 घंटें की नींद। 65 वर्ष की आयु वालों के लिए 7 से आठ घंटे की नींद लेना ज़रूरी हो जाता है। ❑❑

आम के छिलके में कई राज़

आमतौर पर हम आम के छिलकों को कूड़ेदान में फेंक देते हैं लेकिन आपको जानकारी हैरानी होगी कि आम के छिलकों में ढेर सारे लाभ छिपे हुए है। आम का छिलका दिल की सेहत के लिए अच्छा होता है। यह हार्ट अटैक और कार्डियक अरेस्ट जैसी दिल की समस्याओं से बचाता है। मधुमेह के मरीज़ों के लिए भी यह लाभकारी है। आम के छिलके में एंटी- ऑक्सीडेंट गुण होते हैं, जो कैंसर से बचाते हैं, ये लंग्स कैंसर, कोलन कैंसर, ब्रेन कैंसर और ब्रेस्ट कैंसर से भी बचा सकते हैं। आम के छिलकों में फाइबर होता है। ये पाचन तंत्र के इम्यून सिस्टम को मज़बूत और स्वस्थ रखने में मददगार है। चेहरे की टैनिंग को दूर करने के लिए आप आम के छिलके को टैनिंग वाली त्वचा पर लगाकर मसाज कर सकती है यदि छिलकों में शहद और एलोवेरा जेल मिलाकर मसाज़ करें तो चेहरे पर और भी निखार आ जाएगा।

शेष.... प्रथम पृष्ठ

कराने में लगे हैं। ख़रबों रुपये के अस्त्र-शस्त्र खरीदरे के बाद भी देश की सीमाएं चारों ओर से असुरक्षित हैं। फिर भी उनका ख़तरा दिखाकर वोट बटोरे जाते हैं। महात्मा गांधी और जवाहर लाल नेहरू की लोकतांत्रिक विचारधारा को दोषपूर्ण बता हिटलर की तानाशाही को श्रेष्ठ साबित किया जाता है।

इन हालात में यही प्रश्न खड़ा होता है कि हम किस दिशा में जा रहे हैं। हमने बड़े-बड़े राजाओं और पराक्रमियों को ख़त्म होते देखा है। बड़े-बड़े नेताओं को अस्पताल के बेड पर मौत का इंतज़ार करते देखा है। यह सब देखने के बाद भी हम मानवता और लोकतंत्र को मजबूत करने के बजाय विघटनकारी नीतियां अपना रहे हैं? हम सभी को उनकी मान्यताओं के अनुकूल निजी जीवन जीने की स्वतंत्रता क्यों नहीं देना चाहते हैं.?

हम भारतीय संविधान को हृदय से अंगीकार क्यों नहीं करते हैं? जब हम भारतीय संविधान की मूल भावना से उलट व्यवहार करते हैं, तो अपने लोकतंत्र की हत्या करने की दिशा में होते हैं। हमें विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश का तमग़ा लेते खुशी होती है मगर उसको सुरक्षित रखने के बजाय अपने स्वार्थ के लिए उसे ख़त्म करने की नीति अपनाते हैं। जब तक इस दिशा में सच्चे मन से प्रयास नहीं होगा, तब तक वह तिल तिल मरेगा और मानवता पीड़ित होगी। ऐसे समय में ही क्रांति होती है, जो हमें वास्तव में अशांत भीड़तंत्र वाला देश बना देगी। ❑❑

शेष.... जीत से ज़्यादा...

इमरान ख़ान बुरी तरह पिट गए। सच्चाई तो यह है कि पाकिस्तान में भ्रष्टाचार बढ़ा ही है। खुद इमरान पर भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगते रहे हैं। इमरान ख़ान की बहन पर भी भ्रष्टाचार के आरोप हैं, विदेश में उनकी अघोषित संपत्ति का पता चला है। विपक्ष दलों का आरोप है कि इमरान ख़ान ने अपनी बहन अलीमा खानम को विदेशों में मौजूद संपत्ति पर लगने वाले कर से बचाने के लिए आयकर नियमों में संशोधन किया। इमरान की पार्टी से संबंधित पंजाब के कई विधायकों और खुद मुख्यमंत्री उस्मान बुजदार पर भी भ्रष्टाचार के आरोप हैं। पाकिस्तान का केन्द्रीय जवाबदेही ब्यूरो इन मामलों की जांच कर रहा है।

इमरान के राज में पाकिस्तान की माली हालत और बदतर हुई है। जनता महंगाई और बेरोज़गारी की मार झेलने को मजबूर है। अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक का अनुमान है कि इस वर्ष पाकिस्तान का विकास दर 1.3 से 1.5 प्रतिशत के बीच रहेगी। हालांकि सरकार का दावा दो प्रतिशत के आसपास का है। महंगाई दर को लेकर पाकिस्तान सरकार का दावा है कि यह 6.5 प्रतिशत रहेगी, जबकि अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष ने नौ प्रतिशत तक रहने की भविष्यवाणी की है चूंकि अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियां पाकिस्तान के अनुकूल नहीं हैं, इसलिए इमरान ख़ान की चुनौतियाँ भविष्य में और बढ़ेंगीं।

अफ़ग़ानिस्तान में ख़राब होते हालात भी पाकिस्तान के भविष्य पर प्रश्नचिह्न लगा रहे हैं। इस समय पाकिस्तान के अंदर सबसे बड़ा निवेशक चीन है। चीन ने चीन पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के तहत अरबों डॉलर का निवेश कर दिया है। स्थानीय आबादी इसके विरोध में है क्योंकि स्थानीय लोगों को आर्थिक गलियारों से संबंधित परियोजनाओं में रोज़गार तो मिला नहीं, बल्कि उनके संसाधन अलग से लूटे जाने लगे। हाल में ख़ैबर पख्तूनख्वां प्रांत में दासू पनबिजली परियोजना में नौ चीनी नागरिक बम धमाके में मारे गए। दासू पनबिजली योजना आर्थिक गलियारे की बड़ी परियोजना है। चीन ने इसे आतंकी हमला माना है। ❑❑

शेष.... आधी सदी बाद हॉकी में...

वह क्वार्टर फाइनल में बेल्जियम से हार गई थी इसलिए उस पर असफलता का टैग लगा रह गया था। इस बार वह क्वॉर्टर फाइनल मुक़ाबला जीतकर सफल टीमों में तो शुमार हो गई है।

महिला हॉकी की जहां तक बात है तो इसका इतिहास पुरुष टीम जैसा चमकदार नहीं है। महिला टीम ने 1980 के मॉक्स्को ओलिंपिक से ही भाग लेना शुरू किया हैं पहले ओलिंपिक में टीम अंतिम स्थान पर रही थी। इस बार टीम पूल मैचों में नीदरलैंड, जर्मनी और ग्रेट ब्रिटेन से जारी तो लगा कि वह क्वार्टर फाइनल में भी शायद स्थान बना सके। लेकिन आख़िरी दो मैचों में आयरलैंड और दक्षिण अफ्रीका को हराकर कर्वाटर फाइनल में जगह बनाने में सफल रही। ब्रांज मेडल जीतने के लिए उसे ब्रिटेन को हराना था, पर कड़ी मेहनत के बाद यह मुक़ाबला हार गई।

कप्तान रानी रामपाल ने कहा, 'इसमें कोई शक नहीं कि हम बेहतर खेले, लेकिन इस हार को पचा पाना बहुत मुश्किल है। पिछड़ने के बाद न केवल वापसी की बल्कि 3-2 की बढ़त भी बनाई। तब लगने लगा था कि हम इतिहास रचने की दहलीज़ पर हैं। वहां से यूं पिछड़ने को मन स्वीकार नहीं कर पा रहा है। ओलिंपिक की शुरुआत में लगातार हार के बाद टॉप की चार टीम में खुद को देखना हौंसला बढ़ाने की बात है। कांस्य पदक जीतने के हम काफी करीब थे, सबसे अच्छी बात यह रही कि हम एक खिलाड़ी, एक टीम के रूप में संगठित होकर खेले। कप्तान ने कहा इस प्रकार के मैचों में कुछ भी परिणाम संभव है। यह समय खिलाड़ियों को हर लिहाज़ से समर्थन देने का है। टीम का हर खिलाड़ी को समर्थन और प्रोत्साहन की ज़रूरत है। अब मुझे विश्वास है कि आगे महिला हॉकी टीम देश के लिए विशेष करेगी। ❑❑

कर्नाटक: कैबिनेट में विद्रोह झेल रहे सीएम बोम्मई के सामने नया संकट, पंचमसाली समुदाय के लिए मिला अल्टीमेटम

कर्नाटक में कोरोना महामारी से मुकाबले के साथ कैबिनेट गठन के बाद विद्रोह से निपटने की कोशिश कर रहे मुख्यमंत्री बसवराज बोम्मई के सामने एक और नई चुनौती खड़ी हो गई है। पंचमसाली समुदाय के बसव जया मृत्युंजय स्वामीजी ने समुदाय को ओबीसी आरक्षण प्रदान करने की समय सीमा निर्धारित करने की सरकार को चेतावनी दे दी है। ललगायत समुदाय के पंचमसाली उप संप्रदाय के जया मृत्युंजय स्वामी ने गुरुवार को चेतावनी दी कि अगर मांग पूरी नहीं हुई तो वह 1 अक्टूबर से बेंगलुरु के फ्रीडम पार्क में विरोध प्रदर्शन शुरू कर देंगे। इस मुद्दे पर सरकार को समझाने की जिम्मेदारी पीडब्ल्यूडी मंत्री सी.सी. पाटिल को दी गई है। जया मृत्युंजय स्वामी ने कहा, हपूर्व मुख्यमंत्री बीएस येदियुरप्पा ने विधानसभा सत्र में ऑवासन दिया था कि मांग पर 6 महीने में विचार किया जाएगा। उस वादे के अनुसार सरकार को 15 सितंबर तक कार्रवाई करनी होगी। बोम्मई, जो उस समय गृह मंत्रालय के प्रभारी थे, उन्होंने पूरा सहयोग दिया था। अब वह मुख्यमंत्री हैं और उन्हें समुदाय को यह सुविधा देनी चाहिए। इस बीच राज्य भर में आरक्षण के प्रति लोगों में जागरूकता पैदा करने के लिए पंचमसाली प्रतिज्ञा पंचायत कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। स्वामी ने कहा कि अभियान 26 अगस्त को एमएम हिल्स से शुरू होगा और यहां से बेंगलुरू तक एक रैली निकाली जाएगी। जया मृत्युंजय स्वामी 2 ए श्रेणी के तहत आरक्षण की मांग कर रहे हैं, जो ललगायत समुदाय के पंचमसाली उप संप्रदाय के लिए अन्य पिछड़ा समुदायों (ओबीसी) के तहत आरक्षण प्रदान करेगा। उन्होंने कहा कि केंद्र द्वारा ओबीसी की अपनी सूची बनाने के लिए राज्यों की शक्ति बहाल करने के साथ, राज्य को इस पर कार्रवाई कर मांग को पूरा करना चाहिए।

शेष.... तहरीके रेशमी रूमाल आंदोलन...

यागिस्तान के मुख्यालय बाजौर में स्थित ज़ायगी में इन दोनों हज़रात का चयन फील्ड कमांडर की हैसिअत से हुआ। हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) ने अपने सहयोगी मौलाना उबैदुल्ला सिंधी (रह॰) को काबुल रवाना कर दिया और खुद सऊदी अरब तशरीफ ले गए। इस सफर का उद्देश्य मुस्लिम देशों से सहयोग प्राप्त करना था इसलिए कि हथियार और इन देशों के व्यवहारिक सहयोग के बिना भारत की आज़ादी सिर्फ एक सपना था और यही सफ़र ब्रिटेनी साम्राज्य के ख़िलाफ़ स्वतंत्रता आंदोलन का सबसे पहला सफल क़दम था जो बाद में रेशमी रूमाल आंदोलन के नाम से मशहूर हुआ। हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) मक्का पहुंचे और वहां तुर्क गवर्नर ग़ालिब पाशा से मुलाक़ात की। हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) की प्रार्थना पर ख़िलाफ़ते उसमानिया के गवर्नर ने ब्रिटेन सरकार के ख़िलाफ़ सहयोग का वादा किया। भारतीय उपमहाद्वीप के मुसलमानों को इस सहयोग की जानकारी देने के लिए गवर्नर ने जनता के नाम एक लम्बा ख़त लिखा जिसमें उन्हें आज़ादी का संघर्ष जारी रखने को कहा गया और अपनी तरफ से ऐलानिया सहयोग का विश्वास दिलाया गया। यह बात उस समय की है जब एक संयुक्त अमेरिका ने विश्व युद्ध में किसी भी पार्टी दल के समर्थन की घोषणा नहीं की थी। बाद में जब अमेरिका ने रूस, फ्रांस और ब्रिटेन की संयुक्त सेना का समर्थन तो जंग का नक़्शा ही पलट गया। तुर्की और जर्मनी को पराजय हुई और दुर्भाग्य से ख़िलाफ़त उसमानिया खुद ही पतन का शिकार हो गयी। अब भारत की भूमि से अंग्रेजी साम्राज्य के ख़ात्मे का हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) का सपना बिखरता हुआ नज़र आने लगा। (असीराने माल्टा)

जब मौलाना सिंधी (रह॰) काबुल पहुंचे तो उन्होंने वहां एक सरकार स्थापित की जिसमें मौलाना सिंधी (रह॰) खुद और मौलाना बरकतुल्ला भोपाली (रह॰) ने मंत्री पद संभाला जबकि महाराजा प्रताप सिंह राष्ट्रपति बनाए गए। 1915 में लश्कर निजात दहिन्दा के नाम से एक फौजी दल की स्थापना हुई जिसका मुख्यालय मदीना मुनव्वरा बना और हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) इसके चीफ कमांडर मुक़र्रर हुए। इसी दौरान जुनूदिया रबानिया के नाम से एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन का गठन हुआ। इस दल का उद्देश्य अंग्रेजी साम्राज्य के ख़िलाफ आज़ादी के आंदोलन के सिलसिले में विश्व बिरादरी से सहयोग प्राप्त करना था। हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) इस संगठन के प्रमुख बनाए गए। मौलाना उबैदुल्लाह सिंधी (रह॰) ने सऊदी अरब में रह रहे हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) के नाम एक खत लिखा जिसमें काबुल में जारी सरगर्मियां और आज़ादी के संघर्ष की विस्तृत योजना के अलावा उन स्थानों और लोगों के नाम भी ज़िक्र किए जो हिन्दोस्तान में ब्रिटेन सरकार के ख़िलाफ़ सशस्त्र संघर्ष का नेतृत्व करने वाले थे प्लान यह था कि देश के हर क्षेत्र से जन गतिविधियों के साथ सशस्त्र संघर्ष किया जाए। यह पत्र एक रेशमी रूमाल पर लिखा गया था इसलिए इस आंदोलन का नाम ही रेशमी रूमाल आंदोलन पड़ गया। इस ख़त के साथ मौलाना मौहम्मद मियां अंसारी ने भी एक ख़त लगा दिया था जिसमें निर्वासित सरकार के पदाधिकारियों के नाम के साथ साथ जुनूदिया रूबानिया के भविष्य के प्लानों का ज़िक्र था। यह ख़त शेख़ अब्दुल रहीम सिंधी (रह॰) के माध्यम से मदीना मनव्वरा भेज दिए गए। दुर्भाग्य से यह ख़त रब नवाज़ नामक एक नए मुस्लिम (नो मुस्लिम) के हाथ लग गए जो वास्तव में शेखुल हिन्द (रह॰) के नव मुस्लिम श्रद्धालू के रूप में ब्रिटेन सरकार का जासूस था इसके बाद यह सभी पत्र मुलतान के ब्रिटेनी कमिश्नर के पास भेज दिए गए, रेशमी रूमाल पर अंकित इन पत्रों के पकड़े जाने के परिणाम में ब्रिटिश रिकॉर्ड के अनुसार ब्रिटेन सरकार के ख़िलाफ़ बग़ावत और साज़िश के अपराध में देशभर से 222 उलमा नेता गिरफ्तार किए गए। हज़रत शेखुल हिन्द (रह॰) और इनके साथी मौलाना वहीद अहमद फैज़ाबादी (रह॰) मौलाना अज़ीर गुल (रह॰), हकीम सैयद नुसरत हुसैन (रह॰) और मौलाना हुसैन अहमद मदनी मक्का में गिरफ्तार हुए और इन्हें काहिरा के रास्ते समुद्री जहाज़ से माल्टा भेज दिया गया जहां इन्हें तीन साल चार महीने के लिए कारावास की सख़्तियां झेलनी पड़ीं। रिहायी के बाद वह बम्बई पहुंचे मगर मौलाना उबैदुल्ला सिंधी (रह॰) और मौलाना मौहम्मद मियां मंसूर अंसारी (रह॰) को कई सालों तक निर्वासित रहना पड़ा। ❑❑

शेष.... मंज़र पस-मंज़र

लिखिते बातें सामने आई हैं।

नेतृत्व का अभाव यानि कोई ख़ास व्यक्ति नेतृत्व के फराइज़ अंजाम नहीं दे रहा था। बल्कि पंचायती फैसलों पर सरदार अमल दरामद करते थे, इन सरदारों में लखनऊ में ममू ख़ां और दिल्ली में बख़्त खां आगे-आगे थे बग़ावत फौज ने की थी लेकिन वह कोई संयुक्त क़यादत फराहम नहीं कर सकी।

विभिन्न तंज़ीमों में इत्तेहाद की कमी यानि उलमा ने आज़ादी की ख़ातिर जान व माल की ज़बरदस्त क़ुर्बानियां पेश कीं लेकिन तंज़ीमी इत्तेहाद और मंसूबाबंदी की कमी से इनकी जद्दोजहद कामयाब नहीं हुई।

देसी रियासतों के शासकों की खुदगर्ज़ी, देसी शासकों के पेश नज़र निजी मफादात थे, वह अपनी खोयी हुई रियासतों की वापसी के लिए संघर्ष कर रहे थे। लेकिन इन कोशिशों में कोई तालमेल नहीं था, दूरअंदेशी और बसीरत की कमी से उन्होंने अंग्रेज़ों के ख़तरे को महसूस नहीं किया और जिसने महसूस किया उनका साथ नहीं दिया। यही वजह थी कि टीपू सुलतान को अकेले अंग्रेज़ों का मुक़ाबला करना पड़ा। यह देसी शासक अपनी खोयी हुई रियासत को प्राप्त करने के लिए अंग्रेज़ों को निकालना ज़रूर चाहते थे लेकिन इनके ख़िलाफ़ वह कोई एकजुट मोर्चा क़ायम नहीं कर सके। कुछ देसी शासक जिनका हित प्रभावित हुआ था, बग़ावत से अलग रहे बल्कि किसी हद तक अंग्रेज़ी सत्ता का साथ भी दिया इन हालात में इन्क़लाब 1857 की कामयाबी मुश्किल थी। ❑❑

SHANTI MISSION (HINDI WEEKLY) NEW DELHI Postal Registration No. DL(C)-01/1266/2021-23
Publishing Date : **8 Aug. 2021** Posting Days : **MON. - TUE.** at **N.D.P.S.O.** New Delhi-110002 R.N.I. 57270/93

मंज़र पस-मंज़र — मीम.सीन.जीम

इन्क़लाब 1857
हिन्दुस्तान की पहली जंग का नक़ीब

इन्क्लाब 1857 की तहरीक हमारी आज़ादी की तारीख़ का एक नाक़ाबिल फरामोश बाब है। इसके ज़िक्र के बग़ैर आज़ादी की तारीख़ मुकम्मल नहीं हो सकती। इसकी हक़ीक़त को समझने के लिए इसके पसमंज़र को समझना ज़रूरी है तो आईये पहले इन हालात का किसी क़द्र तफ्सील से जायज़ा लें जो इस इन्क्लाब का सबब बनें। इसके अलावा इन असबाब का ज़िक्र भी ज़रूरी है जिन की वजह से 1857 की तहरीक जिसे भारत की पहली जंग आज़ादी से ताबीर किया जाता है जबकि जंगे आज़ादी की शुरुआत 1757 में जंग

ईस्ट इंडिया कम्पनी जो एक सियासी ताक़त बन कर उभर रही थी। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इसने साज़िशों का जाल बिछा दिया। इन्हीं साज़िशों की बुनियाद पर जब इसने 1857 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा के नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी की जंग में शिकस्त दी तो उसके हौंसले काफी बुलंद हो गए। इस कामयाबी के बाद उसकी जीत का सिलसिला शुरू हो गया इन जीतों का संक्षिप्त वर्णन निम्न है।

प्लासी से ही हो जाती है। जो असफलता का शिकार हो गयी।

1613 में इंगलिस्तान के कुछ व्यापारियों ने हिन्दुस्तान में व्यापार की गरज़ से एक ज्वाइंट स्टॉक कम्पनी की बुनियाद डाली और हिन्दोस्तान के शहंशाह जहांगीर से सूरत में फैक्ट्री क़ायम करने की इजाज़त हासिल की। यह कम्पनी एक दूसरी कम्पनी से मिलकर ईस्ट इंडिया कम्पनी बनी। इस कम्पनी ने तिजारत की आड़ में हिन्दोस्तान पर कब्ज़ा करने का मंसूबा बनाया और अपनी साज़िशों और रेशावानियों से अपने मक़सद में कामयाब भी हुई। इस मक़सद की कामयाबी में इस देश के गद्दारों और बेईमानी जमीर फरोशों से उन्हें काफी मदद मिली जिसकी तफ्सील शर्मनाक भी है और इबरतनाक भी

ईस्ट इंडिया कम्पनी जो एक सियासी ताक़त बन कर उभर रही थी। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए इसने साज़िशों का जाल बिछा दिया। इन्हीं साज़िशों की बुनियाद पर जब इसने 1857 में बंगाल, बिहार और उड़ीसा के नवाब सिराजुद्दौला को प्लासी की जंग में शिकस्त दी तो उसके हौंसले काफी बुलंद हो गए। इस कामयाबी के बाद उसकी जीत का सिलसिला शुरू हो गया इन जीतों का संक्षिप्त वर्णन निम्न है।

1764 में बक्सर की लड़ाई के बाद सुलहनामा इलाहाबाद के तहत मुग़ल शहंशाह से बिहार, बंगाल और उड़ीसा की दीवानी छब्बीस लाख रुपए के औज़ हासिल की।

1765 में अवध के तीसरे नवाब शुजाउद्दौला को मिला कर रोहिला ताक़त को ख़त्म कर दिया।

1799 में मराठों और निज़ाम को सब्ज़बाग़ दिखाकर हिन्दोस्तान के दूर अंदेश शासक टीपू सुल्तान को ख़त्म कर दिया।

1801 में कर्नाटक पर कब्ज़ा कर लिया।

1802 में विभिन्न प्रकार की साज़िशों को अपना मातहत बना लिया।

1803 में (16 सितम्बर) में दिल्ली को मराठों से आज़ाद कराने के बहाने इस पर कब्ज़ा कर लिया।

जीत की यह सूचि लम्बी है इसका सिलसिला उस समय तक जारी रहा जब तक हिन्दोस्तान पर कम्पनी का कब्ज़ा पूरा नहीं हो गया। इन जीतों में हिन्दोस्तान पर आधारित फौज का बड़ा भाग था। इस समय हिन्दोस्तान राजनीतिक जागरुकता से वंचित था। हक़-नमक को अधिक अहमियत प्राप्त थी और अंग्रेज़ों ने इससे पूरा लाभ उठाया और खुद हिन्दोस्तानियों को अपना नमक ख़्वार बना कर हिन्दोस्तान पर कब्ज़ा कर लिया।

अब आईये उन असबाब पर नज़र डालें जिनकी बक़ा पर इन्क़लाब 1857 वक़ू पज़ीर हुआ, कुछ कारण यह हैं।

कदीम मआशी निज़ाम की बेईन्तहा तबाही जिस से किसानों और दस्तकारों में ज़बरदस्त बेचैनी फैल गयी।

धर्म-परिवर्तन की तलवार हिन्दोस्तानियों के सिरों पर लटक रही थी। इन्हें अपना मज़हब ख़तरे में नज़र आने लगा। हिन्दू और मुसलमान अपने धर्म की रक्षा में एकजुट हो गए। उलमा भी इस जद्दोजहद में शामिल हो गए। इनकी भागीदारी से अवामी बेदारी पैदा हो गयी।

देसी शासकों की नाराज़गी यानि जिनकी रियासतें हड़प ली गयीं थीं। वह इन्हें दोबारा प्राप्त करने के लिए फिक्रमंद थे। वह अपने नमक ख्वारों के साथ इस बग़ावत में शामिल हो गए।

गवर्नर जनरल लार्ड बैन्टिंग (1828-1835) के काल से समाजी और तालीमी सुधारों का जो सिलसिला शुरू हुआ जिन में सती की प्रथा को ग़ैरकानूनी क़रार देना (1829), गुलामी की मंसूखी (1843) विधवा की शादी के कानून का लागूकरण (1856) इल्म के फरोग़ के लिए यूनिवर्सिटयों की स्थापना। कलकत्ता, मुम्बई, और मदरसों में यूनिवर्सिटयां क़ायम की गयीं (1857) के इन्कलाब पसंदों के नज़दीक यह सुधार अंग्रेज़ों की चाल थीं। इनका ख़्याल था कि अंग्रेज़ हिन्दोस्तानियों की तहज़ीब को बर्बाद करना चाहते हैं लिहाज़ा वह अंग्रेज़ी शिक्षा के ख़िलाफ़ थे।

अंग्रेज़ फौज के हिन्दोस्तानी सिपाहियों की बेचैनी यानि यह एक अहम वजह थी इनका ख़्याल था कि इनके साथ बेजां सख़्ती की जा रही है। इन्हें छुट्टियां कम मिलती हैं। इनका भत्ता बन्द कर दिया गया है। इन्हें जहाज़ों पर समंदर में भेजा जाना पसंद नहीं था। इनका ख़्याल था कि अंग्रेज किसी भी देसी शासक को बाक़ी नहीं रहने देंगे।

इन शिकायतों ने मई 1857 से बहुत पहले ही नफ़रत की शक़्ल अख़्तयार कर ली थी, और कलकत्ता से पेशावर छावनियों में आग की तरह फैल गयी थी। यह भी मशहूर हो गया था कि आटे में हड्डियों का बुरादा मिला कर फौजियों का मज़हब ख़राब किया जा रहा हैं ऐसे में कारतूस में चर्बी की ख़बर ने आग पर तेल का काम किया। 26 फरवरी 1857 में बैरकपुर कलकत्ता के सिपाहियों ने कारतूस इस्तेमाल करने से इंकार कर दिया और 06 मई 1857 को मेरठ के 90 सिपाहियों को कारतूस इस्तेमाल न करने पर कोर्ट मार्शल कर दिया गया। जिस से 10 मई 1857 को आम बग़ावत का संभवत: कोई ख़ास समय मुक़र्रर था जैसाकि विभिन्न स्थानों पर चपातियों के बंटवारे से ज़ाहिर है जो संभवत: किसी ख़ास बात पर बग़ावत शुरू करने का इशारा था लेकिन मेरठ के कोर्ट मार्शल ने इस चिंगारी को समय से पहले ही शोलों में बदल दिया। वैसे हक़ीकतन बग़ावत फूट पड़ने का सबब कारतूस की चर्बी नहीं था बल्कि फौजियों का कोर्ट मार्शल था, इसलिए फौजियों को यकीन था कि इन्हें इंसाफ़ नहीं मिलेगा, फौज यह भी समझती थी कि सरकार के पास इनसे लड़ने के माध्यम नहीं हैं। यह थे वह असबाब

अंग्रेज़ फौज के हिन्दोस्तानी सिपाहियों की बेचैनी यानि यह एक अहम वजह थी इनका ख़्याल था कि इनके साथ बेजां सख़्ती की जा रही है। इन्हें छुट्टियां कम मिलती हैं। इनका भत्ता बन्द कर दिया गया है। इन्हें जहाज़ों पर समंदर में भेजा जाना पसंद नहीं था। इनका ख़्याल था कि अंग्रेज किसी भी देसी शासक को बाक़ी नहीं रहने देंगे। इन शिकायतों ने मई 1857 से बहुत पहले ही नफ़रत की शक़्ल अख़्तयार कर ली थी।

जिसने इंन्लाब 1857 को जन्म दिया अब इस इन्क़लाब की नाकामी पर नज़र डालते हैं:-

1857 के आज़ादी आंदोलन में देश के विभिन्न वर्गों ने अपने अपने विशेष दृष्टिकोण से भाग लिया। इनमें किसी तरह का आपसी इत्तेहाद नहीं था। बग़ावत फौज ने शुरू की थी लेकिन फौज के अलावा पूर्व शासक वर्ग (जिनका स्वार्थ प्रभावित हुआ था) नौकरी पेशा लोग और उलमा इसमें शरीक हो गए थे।

बगावत की असफलता के असबाब पर ग़ौर करने से निम्न

बाक़ी पेज 11 पर

आज़ादी के परवाने 'बिस्मिल'

राम प्रसाद 'बिस्मिल'

इलाही ख़ैर! वो हरदम नई बेदाद करते हैं
हमें तोहमत लगाते हैं, जो हम फरियाद करते हैं
कभी आज़ाद करते हैं, कभी बेदाद करते हैं
मगर इस पर भी हम सौ जी से उनको याद करते हैं
असीराने-कफस से काश, यह सैयाद कह देता
रहो आज़ाद होकर, हम तुम्हें आज़ाद करते हैं
रहा करता है अगले ग़म को क्या-क्या इंतज़ार इसका
कि देखें वो दिले-नाशाद को कब शाद करते हैं
यह कह-कहकर बसर की, उम्र हमने कैद्रे उल्फत में
वो अब आज़ाद करते हैं, वो अब आज़ाद करते हैं

ज़रूरी ऐलान

आपकी ख़रीदारी अवधि पते की चिट पर अंकित है। अवधि की समाप्ति से पूर्व रक़म भेजने की कृपा करें।

रक़म भेजने के तरीक़े:-

❶ मनीआर्डर द्वारा ❷ **Paytm** या **PhonePe** द्वारा **9811198820** पर **SHANTI MISSION**

❸ ऑनलाइन हेतु बैंक खाते का विवरण
SBI A/c **10310541455**
Branch: **Indraprastha Estate**
IFS Code: **SBIN0001187**

ख़रीदारी चन्दा

वार्षिक	Rs.130/-
6 महीने के लिए	Rs.70/-
एक प्रति	Rs.3/-

जानकारी के लिये सम्पर्क करें
साप्ताहिक
शांति मिशन
1, बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली-110002
फोन : 011-23311455

अपने प्रिय अख़बार साप्ताहिक शांति मिशन को इंटरनेट पर देखने के लिये लॉगऑन करें:
www.aljamiat.in ——— www.jahazimedia.com
Mob. 9811198820 — E-mail: Shantimissionweekly@gmail.com

जमीअत ट्रस्ट सोसायटी की तरफ से मुद्रक, प्रकाशक शकील अहमद सैयद ने शेरवानी आर्ट प्रिंटर्स, 1480, क़ासिमजान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवाकर मदनी हाल, न. 1, बहादुर शाह ज़फ़र मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित किया। संपादक:- मोहम्मद सालिम, फोन:- 23311455, 23317729, फैक्स:- 23316173